आँचल

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

आँचल

(24वाँ अंक, सितंबर 2025 - मार्च 2026)

(कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका)

कार्यालय का पता

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई
7वीं मंजिल, क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं. भवन, बाँद्रा-कुर्ला संकुल, मुंबई - 400051
दूरभाष - 022-26520873, ई-मेल - pdashippingmum@cag.gov.in
वेबसाइट - https://cag.gov.in/mab/mumbai-i/hi

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री विजय एन. कोठारी
महानिदेशक

मार्गदर्शन

श्री संदीप डी. पांडुले
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री सुशील टोपनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
सुश्री शिवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक

श्री जय राम सिंह, क. अनुवादक

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) - कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है । इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि कार्यालय उन विचारों से सहमत हो।

संरक्षक की कलम से

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के प्रावधानों के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा है । हिंदी सही मायनों में देश की सिर्फ राजभाषा ही नहीं, अपितु कामकाज की भाषा बने, इसकी जिम्मेवारी हम सबों की है । सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति रचनात्मक रुचि के संवर्द्धन में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

इसी क्रम में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है । इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि कार्यालय के अधिकारी / कर्मचारी उत्साहपूर्वक हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखकर पत्रिका की गुणवत्ता और पठनीयता, दोनों की अभिवृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं ।

हिंदी विश्व-पटल पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । भारत के हर हिस्से में हिंदी को बोलने या समझनेवाले लोग मिल जाते हैं । इस तरह हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता एवं संवाद की सूत्रधार की भूमिका अदा करती है । संस्कृत को छोड़ दें तो हिंदी संभवतः विश्व की एकमात्र भाषा है जो जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है । पिछले 79 वर्षों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हमने काफी प्रगति की है, परंतु बहुत कुछ अभी करना है । मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे अधिक से अधिक मौलिक काम हिंदी में करें और राजभाषा के सम्यक प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें ।

मैं संपादक-मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया है । मेरी कामना है कि यह पत्रिका इसी सहजता एवं सरलता से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाती रहे एवं निरंतर प्रगति करती रहे ।

विजय एन. कोठारी
महानिदेशक

संदेश

हिंदी भारत की राजभाषा है । इस नाते हिंदी की अपनी प्रतिष्ठा है एवं दायित्व भी है । प्रतिष्ठा इस रूप में कि यह वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । दायित्व इस अर्थ में कि हिंदी को भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सूचीबद्ध समस्त 22 भाषाओं को प्रोत्साहन देते हुए भाषाई समरसता एवं समावेशिकता के माध्यम से स्वयं भारत की राजभाषा और कामकाज की भाषा बने । केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालय हिंदी में मौलिक कार्य का माहौल बनाने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं ।

इसी कड़ी में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका “आँचल“ अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल सिद्ध हुई है । कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका “**आँचल**“ कार्मिकों को विभिन्न विषयों पर अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए एक सार्थक एवं सारस्वत मंच प्रदान करती है । मुझे आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ सिद्ध होगी ।

आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी भविष्य में भी इस पत्रिका को उत्कृष्ट और ज्ञानवर्द्धक बनाने के प्रति अपना उत्साह और सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे । हिंदी भी भारत की किसी भी अन्य क्षेत्रीय भाषा की तरह ही यहाँ की मिट्टी की उपज है और इस नाते भारतीय संस्कारों से लबरेज है ।

संदीप डी. पांडुले
निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का शीर्षक		रचनाकार	पृष्ठ संख्या
	संरक्षक की कलम से		2	
	संदेश		3	
	संपादकीय		5	
1	स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि			8
2	ऑपरेशन सिन्दूर			13
3	चुनावी पैसा - एक अमर कथा	कविता	सुश्री कीर्ति राज	18
4	असली सुकून	कविता	श्री अनिल पूनिया	19
5	भारत : एक भाव, एक यात्रा	कविता	श्री अजिंक्य साळवे	21
6	पिता : मौन में निभाई गई जिम्मेदारियाँ	कविता	श्रीमती सारिका ए. साळवे	23
7	भाग्यनगर की चाय	कविता	श्री विनायक बोकड़े	24
8	मेरे ऑफिस की लेखापरीक्षा	कविता	श्री अजीत कुमार	26
9	भारत मर गया है	कविता	सुश्री प्रिया सिंह	29
10	सरकारी नौकर की व्यथा	कविता	श्री प्रवीण नाफड़े	30
11	भारत में AQI: एक बढ़ता जनस्वास्थ्य संकट	निबंध	श्री अभय भंडारी	31
12	अस्थाई कर्मचारी का जीवन	निबंध	श्री आकाश भिंगारदिवे	34
13	अच्छा मनुष्य कौन होता है	निबंध	सुश्री मंजरी सारस्वत	37
14	मेरी जालेश्वर यात्रा	यात्रा-वृत्तांत	श्री पारितोष कुमार मल्ल	39
15	मुंबई में सरकारी नौकरी	हास्य-व्यंग्य	श्री सचिन पन्नू	41
16	माळवण से मुम्बई	यात्रा-वृत्तांत	श्रीमती वीणा जी शिरशाट	43
17	सरकारी कार्यालयों में हास्य-मनोरंजन की भूमिका	निबंध	सुश्री शिवानी	45
18	चलचोटिया विश्वविद्यालय	हास्य-व्यंग्य	श्री जय राम सिंह	48
19	इंटरनेट के आने से पहले	ललित निबंध	श्रीमती बिन्दु अचन	51
20	राजभाषा नियम 1976			54
22	आपके पत्रः आपकी प्रतिक्रियाएँ			58
23	नियुक्तियाँ/पदोन्नतियाँ/स्थानांतरण/सेवानिवृत्ति			59
24	चित्रों के झरोखों से			60

एआई पर आधारित अनुवाद टूल - भाषिणी

(संपादकीय)

श्री जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

भारत एक विविध, बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश है जो हजारों भाषाओं का घर है। जबकि यह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है, कई भाषाओं की उपस्थिति के कारण व्यवसाय मालिकों के लिए देश के बहु-बाजारों में काम करना मुश्किल हो जाता है। बेशक, व्यवसाय भाषा बाधाओं को दूर करने के लिए भारतीय भाषा अनुवाद सेवाओं का उपयनकरन करोग कर सकते हैं। हालाँकि, इतनी सारी भाषाओं से निपटना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

भाषिणी एक ऐसा अनुवाद उपकरण है जो कंपनियों को भाषा चुनौतियों को हल करने में मदद करने के लिए प्रशासनिक एवं बौद्धिक क्षितिज पर उभरा है। जो चीज इसे दिलचस्प बनाती है वह यह है कि यह एआई-संचालित है। आइए भाषिणी एआई और इसमें एआई की भूमिका के बारे में जानने के लिए और अधिक गहराई से जानें।

भाषिणी क्या है?

भाषिणी एक एआई-चालित भाषा अनुवाद प्रणाली है जो भाषा बाधाओं को दूर करने और विभिन्न भारतीय भाषाओं के वक्ताओं के बीच बातचीत को बढ़ावा देने में मदद करती है। यह एंड्रॉइड और आईओएस ऐप्स के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है । इसकी संरचना उपयोगकर्ता-मित्रता के उच्च मानदंडों पर आधारित है।

यह उपकरण डिजिटल इंडिया भाषिणी डिवीजन (डीआईबीडी) में विकसित किया गया था जो भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक कंपनी 'डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन' के अंतर्गत आता है। भाषिणी हर भारतीय को इंटरनेट तक पहुंचने और विभिन्न ऑनलाइन सेवाओं से लाभ उठाने में सक्षम बनाने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक भाषा प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना, पारंपरिक भाषा चुनौतियों की बेड़ियों को तोड़ने वाला एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना और देश के हर नागरिक तक डिजिटल क्रांति को ले जाना है।

भाषा प्रसंस्करण में एआई की भूमिका

आइए, अब भाषिणी की भाषा प्रसंस्करण में एआई की भूमिका को समझें। इसके लिए हमें इसकी तकनीकी बारीकियों को देखना होगा। तो, इसमें और भी बहुत कुछ है।

तकनीकी संरचना

भाषिणी एआई भारतीय भाषाओं की जटिलताओं से निपटने के लिए डिज़ाइन की गई डीप लर्निंग तकनीकों से लैस है। यह ट्रांसफॉर्मर-आधारित न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है जो विभिन्न प्रसिद्ध

डिजाइनों से संकेत लेता है। यह उपकरण भारतीय भाषाओं की बारीकियों के साथ संरेखित करने के लिए सिला गया है जो इसकी प्रभावशीलता सुनिश्चित करता है। इसके विकासकर्ताओं ने इसे पुस्तकों, सोशल मीडिया, समाचार लेखों आदि जैसे विभिन्न स्रोतों से प्रशिक्षित करके एक मजबूत एआई-संचालित अनुवाद उपकरण बनाया है। यही कारण है कि भाषिणी विभिन्न मुहावरों, प्रासंगिक निहितार्थों आदि को समझती है, जो एक भाषा के लिए अद्‌वितीय हैं।

इसके अतिरिक्त, भाषिणी विशिष्ट टोकनाइजेशन और प्रीप्रोसेसिंग विधियों का लाभ उठाता है जो इसे विभिन्न भारतीय लिपियों और वर्णों को प्रबंधित करने में मदद करता है। ये विधियाँ इनपुट टेक्स्ट को प्रत्येक भाषा के टोकन या उप-शब्द इकाइयों में विभाजित करती हैं।

प्रदर्शन पर आधारित होने के दौरान, भाषिणी डोमेन-आधारित फाइन-ट्यूनिंग और ट्रांसफर लर्निंग जैसी विधियों के कारण अनुकूलनीय भी है। यह अनुकूलित डेटा प्रीट्रीटमेंट और अनुकूलन दृष्टिकोण के साथ गहन शिक्षण सिद्‌धांतों सहित प्रौद्‌योगिकियों से लैस है। सहयोगात्मक रूप से, वे एक मॉडल उत्पन्न करते हैं जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में पाठ का विश्लेषण और उत्पादन करने में सक्षम है।

टोकनाइजेशन और प्रीप्रोसेसिंग विधियाँ

भारतीय भाषाओं की प्रकृति भिन्न-भिन्न हैं और उनकी लिपियाँ और वर्ण-समुच्चय विविध हैं। तदनुसार, भाषिणी विशिष्ट टोकनाइजेशन और प्रीप्रोसेसिंग विधियों का उपयोग करता है। यह इनपुट टेक्स्ट को प्रत्येक भाषा के लिए विशिष्ट टोकन या उप-शब्द इकाइयों में विभाजित करता है। इसका परिणाम होता है कि कुशल प्रसंस्करण और प्रतिनिधित्व इस टूल की विशेषता बन जाती है।

निरंतर संरेखण

भाषिणी एआई-चालित है। इसके अलावा, कई भाषाओं और डोमेन में प्रदर्शन में एकरूपता में सुधार और सुनिश्चित करने के लिए निरंतर संरेखण और अनुकूलन की आवश्यकता होती है। भाषिणी इस प्रकार व्यापक डोमेन-विशिष्ट फाइन-ट्यूनिंग और ट्रांसफर लर्निंग जैसी प्रक्रियाओं से गुजरती है। कोई आश्चर्य नहीं, यह उतना ही लचीला और अनुकूल है।

व्यापक प्रशिक्षण

भाषिणी के इस तरह के क्रांतिकारी एआई अनुवाद उपकरण होने का एक और कारण यह है कि इसे प्रशिक्षित करने के लिए डेटा की विशाल मात्रा है। इसके निर्माताओं ने उपकरण को प्रशिक्षित करने के लिए डेटा स्रोतों का चयन करते समय कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह भाषिणी को एक अनुकरणीय उपकरण बनाता है जिसका भारतीय और विदेशी व्यवसाय के मालिक विभिन्न व्यावसायिक बाजारों में अपने व्यावसायिक प्रयासों को पूरा करते समय उपयोग कर सकते हैं।

भाषिणी बढ़ती वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक विशाल कदम के रूप में आ रही है। भाषा की बाधाओं को दूर करके, इंटरनेट कनेक्शन वाला प्रत्येक भारतीय जानकारी के भंडार तक पहुंच सकता है और अधिक विद्‌वान और जानकार बनकर खुद को

सशक्त बना सकता है। जैसा कि हम इन दिनों कहते हैं - यह डिजिटल समावेशन को सुनिश्चित करता है !

भाषिणी को बहुत कम समय में ही अपार लोकप्रियता मिलनी शुरु हो गई है । भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग ने इसे अपनी आधिकारिक अनुवाद-व्यवस्था के टूल के रूप में स्वीकार किया है । भारत सरकार के कई विभागों, संसद के सदनों, कई राज्य-सरकारों के विभाग इस एआई आधारित अनुवाद टूल भाषिणी का उपयोग सफलतापूर्वक कर रहे हैं ।

तुम रूप कर्म से मुक्त, शब्द के पंख मार,
कर सको सुदूर मनोनभ में जन के विहार,
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार !

- सुमित्रानंदन पंत

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी गृह पत्रिका “आँचल” का यह नियमित स्तम्भ है । इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे ‘आज’ को सुखमय बनाने के लिए अपने ‘आज’ की आहुति दे दी थी । इस अंक में हम दक्षिणी राज्य तमिलनाडु के रहनेवाले स्वतंत्रता के वैसे नायकों की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती । इन्हें इतिहास में वह स्थान नहीं मिला जिसके वे अधिकारी हैं - संपादक)

मैना कुमारी

नाना साहेब की दत्तक पुत्री का नाम मैना कुमारी था। वह एक साहसी और देशभक्त बालिका थीं, जिन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान अपने पिता के साथ रहने से इनकार कर दिया था और बिठूर के किले में ही रुकीं थीं। मैना कुमारी ने अपने पिता, नाना साहेब को देश की सेवा के लिए जाने दिया, यह कहते हुए कि वह क्रांतिकारी की बेटी के रूप में अपनी रक्षा करने में सक्षम हैं।

अंग्रेजों ने उन्हें बंदी बना लिया था, और बहुत यातनाएं देने के बाद भी जब वह नहीं झुकीं, तो अंग्रेजों ने उन्हें जिंदा जला दिया। जब अंग्रेज सैनिक उनके बिठूर स्थित घर आए, तो मैना ने अपनी उम्र से बहुत अधिक निडरता दिखाई। अंग्रेजी सेनापति टामस 'हे' की मृत पुत्री और मैना सहेली थीं, इसलिए सेनापति ने उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन जनरल आउटरम ने इसकी अनुमति नहीं दी ।

मैना की अंतिम इच्छा अपने पिता के महल के ढेर पर बैठकर रोने की थी, जिसे अंग्रेज जनरल ने पूरा नहीं होने दिया। अंत में, अंग्रेजों ने उसे महल की राख के साथ ही जिंदा जला दिया ।

मैना के इस बलिदान को चपला देवी द्वारा रचित कहानी "नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया" (NCERT कक्षा 9) में अमर किया गया है। आज भी कानपुर के एक मार्ग को उनके नाम पर मैनावती मार्ग कहा जाता है ।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी सुश्री मैना देनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

शहीद उधम सिंह

शहीद उधम सिंह (26 दिसंबर 1899 - 31 जुलाई 1940) भारत के एक महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने के लिए 13 मार्च 1940 को लंदन में माइकल ओ'डायर की हत्या की थी। उन्होंने अपना नाम 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' रखा, जो सर्वधर्म समभाव का प्रतीक था। उन्हें 31 जुलाई 1940 को लंदन में फांसी दी गई।

उधम सिंह का जन्म पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम शेर सिंह था। कम उम्र में माता-पिता के निधन के बाद, उनका पालन-पोषण अमृतसर के एक अनाथालय में हुआ।

उधमसिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना ध्येय को पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे।

उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई-बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके।

बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। 4 जून 1940 को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई। भारत में शहीद उधम सिंह कम्बोज के नाम से कई स्थानों का नाम रखा गया है ।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी अमर शहीद श्री उधम सिंह जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

श्री एस. डी. किचलू

एस.डी.किचलू
S. D. KITCHLEW

श्री एस. डी. किचलू का जन्म पंजाब के अमृतसर में अज़ीज़ुद्दीन किचलू और दान बीवी के कश्मीरी मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके पिता के पास एक पश्मिना और केसर व्यापार व्यवसाय था । इनका परिवार मूल रूप से बारामुल्ला के ब्राह्मण परिवार से संबंधित था। उनके पूर्वजों में, दादा प्रकाश राम किचलू ने इस्लाम धर्म अपना लिया था । एक और दादा अहमद जो 19वीं शताब्दी के मध्य में 1871 के अकाल के बाद कश्मीर से चले गए थे।

किचलू अमृतसर में इस्लामिया हाई स्कूल गए, बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से बीए पास किया, और भारत में कानून का अभ्यास करने से पहले, जर्मन विश्वविद्यालय से पीएच.डी. पूरा किया।

वतन-वापसी पर उन्होंने अमृतसर में अपना कानूनी अभ्यास शुरु किया, और जल्द ही गांधी के संपर्क में आए। 1919 में, वह अमृतसर शहर के नगर आयुक्त चुने गए थे। उन्होंने सत्याग्रह (असहयोग) आंदोलन में हिस्सा लिया और जल्द ही स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के साथ-साथ अखिल भारतीय खिलाफत समिति में शामिल होने के लिए कानून का अपना अभ्यास छोड़ दिया ।

रॉलेट अधिनियम पर सार्वजनिक विरोध के बाद किचलू पहली बार भारतीय राष्ट्रवाद के एक सिपाही के रूप में सामने आए थे । कानून के खिलाफ पंजाब में प्रमुख विरोध प्रदर्शन के लिए किचलू को गांधी और डॉ सत्यपाल के साथ गिरफ्तार किया गया था। तीनों की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए, जाँलियावाला बाग में एक सार्वजनिक बैठक हुई थी । इसी बैठक में उपस्थित जन-समूह पर जनरल रेजिनाल्ड डायर और उनकी सेना ने निर्बाध गोलीबारी की थी। सैकड़ों की मौत हो गई और सैकड़ों घायल हो गए। यह कार्य 1857 के भारतीय विद्रोह के बाद से नागरिक नरसंहार का सबसे बुरा मामला था जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप पूरे पंजाब में दंगे हुए।

किचलू कांग्रेस पार्टी में 1924 में एआईसीसी के महासचिव, एक महत्वपूर्ण कार्यकारी पद के पद पर पहुंचने से पहले पंजाब इकाई का नेतृत्व कर रहे थे। किचलू 1929-30 में लाहौर में कांग्रेस सत्र की रिसेप्शन कमेटी के अध्यक्ष भी थे जहां पर 26 जनवरी 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारतीय आजादी की घोषणा की और पूरी आजादी हासिल करने के उद्देश्य से नागरिक अवज्ञा और क्रांति के एक युग की शुरुआत की गई ।

किचलू नौजवान भारत सभा (भारतीय युवा कांग्रेस) के एक संस्थापक नेता थे, जिन्होंने सैकड़ों हजारों छात्रों और युवा भारतीयों को राष्ट्रवादी कारणों से आगे बढ़ाया। वह जामिया मिलिया इस्लामिया की फाउंडेशन कमेटी के सदस्य थे । इस समिति के सदस्य 29 अक्टूबर 1920 को मिले और जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के भवन-निर्माण की नींव का नेतृत्व किया।

श्री किचलू ने एक उर्दू दैनिक 'तंजीम' शुरू किया और राष्ट्रीय कार्य के लिए युवा पुरुषों को प्रशिक्षित करने और हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए जनवरी 1921 में अमृतसर में स्वराज आश्रम की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1930-1934 के संघर्षों के दौरान, किचलू को कई बार गिरफ्तार किया गया था । इन्होंने कुल मिलाकर चौदह साल सलाखों के पीछे बिताए थे।

1940 में पंजाब कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने । किचलू पाकिस्तान के लिए मुस्लिम लीग की मांग का विरोध कर रहे थे और बाद में 1947 में उन्होंने भारत के विभाजन की स्वीकृति का जोरदार विरोध किया। उन्होंने देश भर में सार्वजनिक बैठकों और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सत्र में इसके खिलाफ बात की जो आखिरकार संकल्प के लिए मतदान कर चुके थे। उन्होंने इसे सांप्रदायिकता के सामने राष्ट्रवाद का आत्मसमर्पण कहा । विभाजन और आजादी के कुछ सालों बाद, उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी। वह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के करीब चले गए। वह अखिल भारतीय शांति परिषद के संस्थापक अध्यक्ष थे और 1954 में मद्रास में आयोजित अखिल भारतीय शांति परिषद की चौथी कांग्रेस के अध्यक्ष बने रहे, इसके अलावा विश्व शांति परिषद के उपाध्यक्ष बने।

1947 के भारत विभाजन के दौरान भड़के दंगों में अपने घर को जला दिए जाने के बाद किचलू दिल्ली चले गए । उनका बाकी जीवन यूएसएसआर के साथ निकट राजनीतिक और राजनयिक संबंधों की स्थापरना में लगा । उन्हें 1952 में स्टालिन शांति पुरस्कार मिला। 1951 में, एक सरकारी अधिनियम द्वारा उन्हें जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद के साथ जाँलियाँवाला बाग राष्ट्रीय मेमोरियल ट्रस्ट के आजीवन ट्रस्टी बनाया गया ।

9 अक्टूबर 1963 को उनकी मृत्यु हो गई ।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री एस. डी. किचलू को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

जब अंत समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं ।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी ।

- कवि प्रदीप

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। परंतु इस अंक में हम अपने पाठकों के लिए ऑपरेशन सिन्दूर का आधिकारिक विवरण लेकर आ रहे हैं । इस ऑपरेशन के दौरान भारतीय जाँबाज सैनिकों ने मात्र चार दिनों के भीषण वायुयुद्ध में दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिए । दुश्मन का रक्षा तंत्र इतना पंगु कर दिया था कि वह अमेरिका के सामने शांति की भीख माँगता हुआ जा पहुँचा - संपादक)

ऑपरेशन सिन्दूर: राष्ट्रीय सुरक्षा में आत्मनिर्भर नवाचार का उदय
भारत की बढ़ती तकनीकी आत्मनिर्भरता

उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता,
जिस मुल्क की सरहद की निगहबान है आँखें

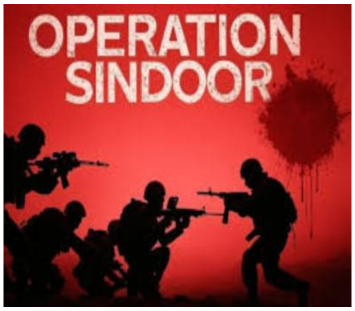

1968 की फिल्म 'आँखें' का एक प्रसिद्ध देशभक्ति गीत है, जिसे मोहम्मद रफ़ी ने गाया है और साहिर लुधियानवी ने लिखा है। यह गीत भारतीय सैनिकों के सजग पहरे (निगहबानी) और राष्ट्र की रक्षा के लिए उनके समर्पण को दर्शाता है।

हमारा देश एक लम्बे समय से आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहा है । पिछले वर्ष 16 अप्रैल के दिन कश्मीर घाटी के पहलगाम क्षेत्र में आतंकवादियों ने छुट्टियाँ मना रहे निहत्थे निर्दोष नागरिकों की धर्म पूछकर हत्या कर दी । इस जघन्य हत्याकांड की देश भर में तीव्र प्रतिक्रिया हुई । ऑपरेशन सिन्दूर, असममित युद्ध के बदलते स्वरूप के अनुरूप एक सुनियोजित सैन्य प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया, जिसमें सैन्य कर्मियों के साथ-साथ निहत्थे नागरिकों को भी निशाना बनाया जा रहा है। अप्रैल 2025 में पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकवादी हमले ने इस बदलाव की भयावह याद दिला दी। भारत की प्रतिक्रिया सोची-समझी, सटीक और रणनीतिक थी। नियंत्रण रेखा या अंतरराष्ट्रीय सीमा पार किए बिना, भारतीय सेना ने आतंकवादी ढाँचे पर हमला किया और कई आतंकवादी ठिकानों को नेस्तनाबूद खत्म किया। हालाँकि, सामरिक कुशलता से परे, स्वदेशी उच्च-तकनीकी प्रणालियों का राष्ट्रीय रक्षा में सहज एकीकरण सबसे महत्वपूर्ण था। चाहे ड्रोन युद्ध हो, बहुस्तरीय वायु रक्षा हो या इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, ऑपरेशन सिन्दूर सैन्य अभियानों में तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत की यात्रा में एक मील का पत्थर है।

वायु रक्षा क्षमताएँ: प्रौद्योगिकी सुरक्षा की पहली पंक्ति के रूप में

7-8 मई 2025 की रात को, पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइलों का उपयोग करके उत्तरी और पश्चिमी भारत में कई सैन्य ठिकानों, जिनमें अवंतीपुरा, श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला,

जालंधर, लुधियाना, आदमपुर, भटिंडा, चंडीगढ़, नाल, फलोदी, उत्तरलाई और भुज शामिल हैं, पर हमला करने का प्रयास किया। एकीकृत मानवरहित हवाई प्रणाली (यूएएस) ग्रिड और वायु रक्षा प्रणालियों द्वारा इन हमलों को विफल कर दिया गया।

वायु रक्षा प्रणालियां रडार, नियंत्रण केंद्रों, तोपखाने और विमान-आधारित तथा जमीनी मिसाइलों के नेटवर्क का उपयोग करके खतरों का पता लगाती हैं, उन पर नज़र रखती हैं और उन्हें निष्क्रिय करती हैं।

8 मई की सुबह, भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान में कई स्थानों पर स्थित वायु रक्षा रडारों और प्रणालियों को निशाना बनाया। लाहौर में एक वायु रक्षा प्रणाली को निष्क्रिय कर दिया गया।

रक्षा-प्रणालियों का प्रदर्शन

ऑपरेशन सिन्दूर के अंतर्गत निम्नलिखित रक्षा-प्रणालियों का उपयोग किया गया:-

• युद्ध में कारगर सिद्ध हो चुकी वायु रक्षा प्रणालियाँ जैसे पेचोरा, ओएसए-एके और कम क्षमता की वायु रक्षा तोपें।

• स्वदेशी रक्षा-प्रणालियाँ जैसे आकाश, जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

आकाश एक कम दूरी की सतह से वायु में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली है, जिसे संवेदनशील क्षेत्रों और हवाई हमलों से बचाव के लिए बनाया गया है। आकाश हथियार प्रणाली समूह मोड या स्वायत्त मोड में एक साथ कई लक्ष्यों को निशाना बना सकती है। इसमें अंतर्निर्मित इलेक्ट्रॉनिक काउंटर-काउंटर मेजर्स (ईसीसीएम) सुविधाएँ हैं। पूरी हथियार प्रणाली को मोबाइल प्लेटफॉर्म पर विन्यसित (कॉन्फ़िगर) किया गया है।

भारत की वायु रक्षा प्रणालियों, जिसमें सेना, नौसेना और मुख्य रूप से वायु सेना की रक्षा-प्रणालियाँ शामिल हैं, ने असाधारण तालमेल के साथ प्रदर्शन किया। इन प्रणालियों ने एक अभेद्य दीवार खड़ी कर दी, जिससे पाकिस्तान द्वारा जवाबी कार्रवाई के कई प्रयास विफल हो गए।

भारतीय वायु सेना की एकीकृत वायु कमान और नियंत्रण प्रणाली (आईएसीसीएस) ने इन सभी तत्वों को एक साथ लाकर आधुनिक युद्ध के लिए आवश्यक नेटवर्क-केन्द्रित (नेटवर्क-सेंट्रिक) परिचालन क्षमता प्रदान की।

सटीक निशाने के साथ आक्रामक कार्रवाई

भारत के आक्रामक हमलों ने प्रमुख पाकिस्तानी हवाई अड्डों - नूर खान एयरबेस और रहीमयार खान एयरबेस को सटीक रूप से निशाना बनाया। मंडराने वाले बमों के दक्षतापूर्ण इस्तेमाल का विनाशकारी प्रभाव हुआ, जिनमें से प्रत्येक ने दुश्मन के रडार और मिसाइल प्रणालियों सहित उच्च-मूल्य वाले लक्ष्यों को ढूंढकर नष्ट कर दिया। मंडराने वाले बम, जिन्हें "आत्मघाती ड्रोन" या "कामिकाज़े ड्रोन" भी कहा जाता

है, ऐसे हथियार हैं जो किसी लक्ष्य क्षेत्र में मंडराते या चक्कर लगाते हुए हमला करने से पहले उपयुक्त लक्ष्य की तलाश करते हैं।

इन हमलों के दौरान भारतीय संपत्तियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा, जो हमारी निगरानी, योजना और वितरण प्रणालियों की प्रभावशीलता को रेखांकित करता है। लंबी दूरी के ड्रोनों से लेकर निर्देशित बमों तक, आधुनिक स्वदेशी तकनीक के उपयोग ने इन हमलों को अत्यधिक प्रभावी और राजनीतिक रूप से सुनियोजित बनाया।

भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान की चीनी प्रदत्त वायु रक्षा प्रणालियों को चकमा देकर और जाम करके मात्र 23 मिनट में मिशन पूरा कर लिया, जो भारत की तकनीकी श्रेष्ठता को दर्शाता है।

निष्क्रिय किए गए खतरों के साक्ष्य

ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान भारतीय प्रणालियों द्वारा निष्क्रिय की गई शत्रुतापूर्ण तकनीकों के ठोस साक्ष्य भी प्राप्त हुए:-

- पीएल-15 मिसाइलों के टुकड़े (चीनी मूल के)
- तुर्की मूल के यूएवी, जिन्हें "यीहा" या "येहाव" नाम दिया गया है
- लंबी दूरी की रॉकेट, क्वाडकॉप्टर और वाणिज्यिक ड्रोन

इन्हें बरामद कर पहचान लिया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि पाकिस्तान द्वारा उन्नत विदेशी हथियारों का लाभ उठाने के प्रयासों के बावजूद, भारत की स्वदेशी वायु रक्षा और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली श्रेष्ठ बनी रही।

प्रणालियों का प्रदर्शन: भारतीय सेना के वायु रक्षा उपाय

12 मई को, सैन्य संचालन महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने ऑपरेशन सिन्दूर की प्रेस ब्रीफिंग में पारंपरिक और आधुनिक प्रणालियों के मिश्रण के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रकाश डाला ।

तैयारी और समन्वय:

चूंकि नियंत्रण रेखा या अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार किए बिना आतंकवादियों पर सटीक हमले किए गए, इसलिए यह आशंका थी कि पाकिस्तान सीमा पार से जवाबी कार्रवाई करेगा। भारतीय सशस्त्र सेनाएँ इसके लिए पहले से ही तैयार थी । दुश्मन की किसी भी हरकत के निपटने के लिए निम्नलिखित तैयारियाँ की गई थीः-

- सेना और वायु सेना दोनों के मानवरहित हवाई प्रणालियों, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध उपकरणों और वायु रक्षा हथियारों का अनूठा संयोजन
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से अंदर की ओर कई रक्षात्मक परतें:

    क. मानवरहित हवाई प्रणालियाँ

    ख. कंधे से दागे जाने वाले हथियार

ग. पारंपरिक वायु रक्षा हथियार

घ. आधुनिक वायु रक्षा हथियार प्रणालियाँ

इस बहुस्तरीय रक्षा प्रणाली ने 9-10 मई की रात को हमारे हवाई अड्डों और लॉजिस्टिक प्रतिष्ठानों पर पाकिस्तानी वायु सेना के हमलों को रोका। पिछले एक दशक में निरंतर सरकारी निवेश से निर्मित ये प्रणालियाँ ऑपरेशन के दौरान शक्तिगुणक साबित हुईं। इन्होंने यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कि दुश्मन के जवाबी हमलों के दौरान भारत भर में नागरिक और सैन्य बुनियादी ढांचा काफी हद तक अप्रभावित रहे।

इसरो का योगदान:-

11 मई को एक कार्यक्रम में, इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने बताया कि देश के नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक उद्देश्यों हेतु कम से कम 10 उपग्रह चौबीसों घंटे निरंतर कार्य कर रहे हैं। देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, देश को अपने उपग्रहों के माध्यम से निगरानी-विस्तार करना होगा। उसे अपने 7,000 किलोमीटर के समुद्रतटीय क्षेत्रों की निगरानी करनी होगी। उसे पूरे उत्तरी भाग की निरंतर निगरानी करनी होगी। उपग्रह और ड्रोन प्रौद्योगिकी के बिना, देश यह हासिल नहीं कर सकता।

ड्रोन शक्ति की भूमिका : एक उभरता स्वदेशी उद्योग

ड्रोन फेडरेशन इंडिया (डीएफआई) 550 से अधिक ड्रोन कंपनियों और 5500 ड्रोन पायलटों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक प्रमुख उद्योग निकाय है। डीएफआई का लक्ष्य 2030 तक भारत को एक वैश्विक ड्रोन हब बनाना है, और यह भारतीय ड्रोन और काउंटर-ड्रोन प्रौद्योगिकी के डिजाइन, विकास, निर्माण, अपनाने और निर्यात को विश्व स्तर पर बढ़ावा देता है। डीएफआई व्यापार करने में आसानी प्रदान करता है, ड्रोन प्रौद्योगिकी को अपनाने को बढ़ावा देता है, और भारत ड्रोन महोत्सव जैसे कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है। ड्रोन क्षेत्र में शामिल कुछ कंपनियां इस प्रकार हैं:-

• अल्फा डिज़ाइन टेक्नोलॉजीज (बेंगलुरु): स्काईस्ट्राइकर के निर्माण के लिए इज़राइल की एल्बिट सिस्टम्स के साथ साझेदारी ।

• टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र में एकीकृत समाधानों की एक पूरी श्रृंखला प्रदान करती है और छह दशकों से अधिक समय से भारत के सशस्त्र बलों की विश्वसनीय भागीदार रही है।

• पारस डिफेंस एंड स्पेस टेक्नोलॉजीज रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में कार्यरत है, जो स्वदेशी रूप से डिज़ाइन, विकसित और निर्मित (IDDM) क्षमताओं के लिए जानी जाती है।

• आईजी ड्रोन्स एक ड्रोन प्रौद्योगिकी कंपनी है जो रक्षा और अन्य औद्योगिक अनुप्रयोगों में विशेषज्ञता प्राप्त ड्रोनों के निर्माण और अनुसंधान एवं विकास के साथ-साथ उद्योग विशेषज्ञों द्वारा ड्रोन सर्वेक्षण, मानचित्रण और निरीक्षण जैसी ड्रोन संबंधी सेवाएं प्रदान करती है। कंपनी ने भारतीय सेना, भारत सरकार, कई राज्य सरकारों आदि के साथ साझेदारी की है।

प्रधानमंत्री जी की घोषणा के अनुसार यों तो ऑपरेशन सिन्दूर अभी भी जारी है, परंतु इस ऑपरेशन के सक्रिय चार दिनों ने वैश्विक सैन्य-मानचित्र पर भारत की धाक जमा दी है । हमारे लड़ाकू विमानों ने क्रूज मिसाइलों को फायर करने में अचूक निशाना लगाया । हमारी मिसाइलों को दुश्मन का कोई भी रडार अथवा रक्षा-प्रणाली पहचानने एवं रोकने में विफल रहे । नियंत्रण रेखा पर हमारे जाँबाजों ने ऐसी गोलीबारी की कि दुश्मन अपनी चौकियाँ छोड़कर भागने लगा । अपने स्वदेशी उपकरणों से वायु-रक्षा की ऐसी अभेद्य दीवार को देखकर प्रत्येक भारतवासी अपने वैज्ञानिकों, सैनिकों और इस काम में लगे सभी पेशेवरों पर गर्वान्वित है । प्रसिद्ध युद्धशास्त्री टॉम कूपर ने इन चार दिनों के युद्ध में भारत की ऐतिहासिक विजय को तकनीकी दक्षता का श्रेष्ठतम नमूना कहा है ।

आँचल परिवार ऑपरेशन सिन्दूर की शानदार सफलता के लिए भारतीय सेना के प्रत्येक सैनिक को सैल्यूट करता है । आइए, हम सभी अपने सैनिकों के सम्मान में उन्हें सैल्यूट करेः-

सीमा पर जो सीना ताने, खड़े हुए निडर सैनिक हैं।
दुश्मन क्या अब कर लेगा, वीर भारती के रक्षक हैं।
बर्फ़ीली चोटियों पर वे, या रेगिस्तान की गर्मी में।
रक्षक बनकर डटे हुए हैं, हर पल, हर कठिन घड़ी में।
सीना ताने खड़े हैं सैनिक, दुश्मन क्या कर लेगा?
हाथ तिरंगा, रग में शोला, फिर कौन उन्हें डर लेगा?
गोली खाकर भी जो गाएं, गीत वतन की मिट्टी का।
शत्रु की क्या मजाल जो, छू जाए आंचल चोटी का?
जय भारत का शंखनाद कर, अग्निपथ पर चलते हैं।
वीर सपूत इस देश के, मौत से भी ना डरते हैं।
सीना ताने खड़े हैं सैनिक, दुश्मन क्या कर लेगा?

स्रोत -
https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=154455&ModuleId=3&reg=3&lang=2

(आँचल परिवार शौर्य, पराक्रम, देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति भारतीय सशस्त्र सेनाओं के जाँबाज सैनिकों एवं इस ऑपरेशन से जुड़े सभी वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं कारीगरों को कृतज्ञ राष्ट्र की तरफ से सैल्यूट एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

चुनावी पैसा - एक अमर कथा

सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक ग्रेड-II

मुंबई में नौकरी लगी, सीना हुआ चौड़ा,
तभी आया चुनाव ड्यूटी का फरमान थोड़ा।
कहा गया–"चुनावी ड्यूटी है, समझो बोनस पक्का",
मैं बोली–"वाह! लोकतंत्र भी देगा छक्का!"
मार्च आते-आते थम न पाई साँस,
मिल गई चुनाव ड्यूटी की खास क्लास।
कहे–"बस 7 महीने की बात है",
मैं बोली–"वाह! देश सेवा की सौगात है।"
7 महीने बीते, पसीना बहाया,
मतदान, गिनती, लोकतंत्र बचाया,
और वेतन? उसने आँखें चुराया।
2025 आया, गया...
पैसा बोला–"मैं अभी नहीं आया।"
2026 में बैठी लिख रही हूँ कविता,
क्योंकि अकाउंट में अब भी सन्नाटा।
लगता है पैसा भी चुनावी है,
सरकार बदले तब ही आएगा शायद ये।
वोट तो सबने डाल दिया भारी,
पर मेरा पैसा अभी भी है सरकारी फाइल में जारी!
अब तो पैसा भी मज़ाक उड़ाता है,
कहता है–"सब्र रखो, लोकतंत्र यही सिखाता है।"
जब सरकार बदलेगी, तब मिलेंगे हम,
तब तक कविताएँ लिखो मैडम!

हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है - शंकरराव कप्पीकेरी

असली सुकून

श्री अनिल पूनिया
आशुलिपिक ग्रेड-II

जो माँगा था, वही भारी पड़ा
बचपन में घर की दहलीज़ छोटी लगती थी,
और आसमान बहुत बड़ा।
हम सपने देखते थे
घर से बाहर जाने के–
मानो बाहर ही सारी आज़ादी रखी हो।

सोचते थे– कब बड़े होंगे,
कब पढ़ाई या नौकरी के बहाने
इस चौखट को पार करेंगे।
अकेले रहेंगे, मनमानी होगी,
कोई पूछने वाला नहीं होगा,
ज़िंदगी अपने नाम लिखी होगी।

वक़्त ने हमारी हर मुराद सुन ली।
शहर दिए, कमरे दिए,
और साथ में ज़िम्मेदारियों का पूरा नक़्शा भी।
पहले पढ़ाई के लिए, फिर नौकरी के लिए
इतना बाहर निकल आए
कि लौटना एक "प्लान" बन गया।

अब घर जाना दिल का फ़ैसला नहीं रहा,
वो छुट्टी की अर्ज़ी बन गया।
कैलेंडर तय करता है
मुलाक़ात होगी या नहीं।
जब चाहा तब जाना–
अब एक पुरानी आदत है जो छूट चुकी है।

हर मुलाक़ात अब तारीख़ों में बँधी है,
और हर विदाई पहले से तय।
जिस आज़ादी की चाह थी,
वह मिल तो गई– पर उसके साथ
एक स्थायी अकेलापन भी आ बैठा।
आज वही चाहिए जो कभी मामूली लगता था–

माँ की आवाज़, पिता की खामोश मौजूदगी,
गाँव का वो घर जिसकी दीवारें

हमसे ज़्यादा सब्रवाली थीं।
घर का सादा खाना, वो शांत दोपहरें,
भाई-बहनों के साथ बिना वजह हँसना,
और बिना सोचे गहरी नींद सो जाना।

अब समझ आता है–
आजादी हमेशा खुशी नहीं होती,
और सबसे सुकून भरी ज़िंदगी
वही थी जिसे छोड़ने की
सबसे ज़्यादा जल्दी थी।

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ । पर मेरे ही देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता - आचार्य विनोबा भावे

भारत: एक भाव, एक यात्रा

श्री अजिंक्य साळवे
लेखापरीक्षक

यह देश केवल
ज़मीन का टुकड़ा नहीं है,
यह स्मृतियों में बसा
एक निरंतर एहसास है।
यहाँ हवा भी
इतिहास से होकर बहती है
और मिट्टी
संघर्ष की गंध अपने भीतर रखती है।

भारत
वह देश है
जहाँ सुबह मंदिर की घंटी से जागती है,
दोपहर मस्जिद की अज़ान सुनती है,
शाम गिरजे की प्रार्थना में ठहरती है
और रात
गुरुद्वारे के दीप में
शांति खोज लेती है।

यहाँ माँ
बच्चे को गोद में सुलाते हुए
उसे संस्कार देती है,
और पिता
खामोशी से
भविष्य की नींव रखता है।
यह देश
घरों में पलता है,
खेतों में पसीना बहाता है
और कारखानों में
सपनों को आकार देता है।

हमने बहुत कुछ सहा है।
गुलामी की लंबी रातें,
विभाजन का दर्द,
भूख, अभाव
और असंख्य बलिदान।
फिर भी
हम रुके नहीं।
हर गिरावट के बाद
खड़े हुए
थोड़े और मजबूत होकर।

आज भारत
अपने वैज्ञानिकों की प्रयोगशालाओं में
नए भविष्य गढ़ता है,
अपने किसानों के हाथों में
धरती को जीवन देता है,
अपने सैनिकों के साहस में
सीमाओं को सुरक्षित रखता है
और अपने युवाओं के सपनों में
दुनिया से संवाद करता है।

हम चाँद तक पहुँचे,
समुद्र की गहराइयों को समझा,
डिजिटल दुनिया में
अपनी पहचान बनाई,
पर फिर भी
गाँव की चौपाल,
माँ की रसोई
और लोकगीतों की धुन
हमारी आत्मा में
अब भी जीवित हैं।

भारत की शक्ति
उसकी विविधता में है।
भाषाएँ बदलती हैं,
वेश बदलते हैं,
रिवाज़ बदलते हैं,
पर एक सूत्र
सबको बाँधे रखता है
साथ चलने की इच्छा।

यह देश
पूर्ण नहीं है,
पर प्रयासरत है।
यहाँ प्रश्न हैं,
संघर्ष हैं,
असहमति है,
पर साथ ही
उम्मीद भी है
और सुधार की जिद भी।

भारत
एक दिन में महान नहीं हुआ,
और न ही
एक दिन में होगा।
यह पीढ़ी दर पीढ़ी
जिया जाने वाला सपना है
जिसे हम
अपने कर्मों से
हर दिन थोड़ा बेहतर बनाते हैं।

मुझे गर्व है
कि मैं ऐसे देश से हूँ
जो झुकता नहीं,
पर सीखता है।
जो परंपरा को
संभालकर रखता है
और भविष्य को
खुली आँखों से देखता है।

भारत
मेरे लिए
एक नाम नहीं,
एक जिम्मेदारी है।

हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे बड़ी, अच्छी और शिरोमणि है - ग्रियर्सन

पिता: मौन में निभाई गई ज़िम्मेदारियाँ

श्रीमती सारिका ए साळवे
पत्नी - श्री अजिंक्य साळवे,
लेखापरीक्षक

वह बोलता कम है,
पर उसके मौन में
पूरा घर बसता है।

वह अपने शब्दों से नहीं,
अपने कर्मों से
स्नेह प्रकट करता है।
उसकी चुप्पी उपेक्षा नहीं,
एक गहरी जिम्मेदारी है
जिसे वह पूरी निष्ठा से निभाता है।

सुबह की पहली हलचल
अक्सर उसी से शुरू होती है,
और रात की अंतिम चिंता
भी उसी के साथ सोती है।
दिन भर की थकान
वह दरवाज़े के बाहर उतार देता है,
ताकि घर के भीतर
सिर्फ़ भरोसा प्रवेश करे।

उसके अपने सपने
कभी शिकायत नहीं करते।
वे धीरे-धीरे
बच्चों की ज़रूरतों में
परिवर्तित हो जाते हैं।
वह इसे त्याग नहीं कहता,
बस अपना कर्तव्य मानता है।

वह प्यार जताने में संकोच करता है,
पर उसकी हर सीख में
सुरक्षा छुपी होती है।
उसकी सख़्ती में कठोरता नहीं,
आने वाले कल की
एक शांत चिंता होती है।

वह मंच नहीं चाहता,
प्रशंसा की प्रतीक्षा नहीं करता।
उसके लिए सम्मान
शब्दों में नहीं,
परिवार के सुकून में
अर्थ पाता है।

जब वह मौन रहता है,
तो समझ लेना चाहिए
कि वह कम नहीं,
बहुत कुछ सोच रहा है।
उसका मौन
कमज़ोरी नहीं,
एक मज़बूत स्तंभ है
जिस पर पूरा घर टिका है।

पिता
एक ऐसा व्यक्तित्व है
जो स्वयं पीछे रहकर
सबको आगे बढ़ाता है।
उसकी ज़िम्मेदारियाँ
शोर नहीं करतीं,
पर जीवन भर
साथ निभाती हैं।

भाग्यनगर की चाय

श्री विनायक बोकड़े
सहा. पर्यवेक्षक

मैं और मेरा भाग्य
एक दूसरे से आँखमिचौली खेलते हैं
कभी हम दोनों पास होते हैं
कभी हम दोनों अथाह नदी हेलते हैं

एक दिन भाग्यनगर शहर के किसी भाग में
कम्प्यूटर की किसी क्लास में
हिम्मत जुटाकर मैंने उस साँवली सलोनी से
पूछ लिया-"चाय पियोगी मेरे साथ?"

उसने पहले मुझे निहारा, कुछ सोचा
और फिर मुस्कराकर 'हाँ' कह दिया।
मुझे आज भी याद है कि
कैंटीन की बेस्वाद, बेरंग सी चाय
उस रोज बड़ी स्पेशल, ताज़गी भरी
कुछ विशिष्ट सी लगी थी।

उस चायपान के बाद मेरा
सचमुच 'भाग्योदय' हो गया था
हम जब- तब चाय पीने लगे
कभी हुसैन सागर झील के किनारे
केतली वाली कड़क चाय पीते
कभी चारमीनार के पास कप और प्लेट में
हैदराबादी चाय का लुत्फ लेते
तो कभी अल्फा होटल की
चाय पीते हुए रेशमी ख्वाब बुनते।

उस समय चाय का नाम ज़ेहन में आते ही
मुझे 'कुछ-कुछ' होने लगता था
चाय का दीदार होते ही
चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती थी
पहला सिप पीते ही
खुमारी सी छाने लगती थी
फिर 'चाय' मुझमें और
मैं 'चाय' में
डूबता-उतराता रहता था।

सच कहूं तो मुझे 'चाय' से
लव वाला इश्क हो गया था
और शायद 'चाय' को भी
मुझसे ---------

चाय जो मेरे लिए कभी
बस टाइमपास हुआ करती थी
एकदम से मेरी जरूरत बन गई,
मेरे जीवन का हिस्सा, मेरे दिल की धड़कन।
चाय न पियूँ तो मेरी सुबह न हो,
चाय न मिले तो मेरी शाम न गुजरे।
मैं 'चायमय' और चाय भी
शायद 'विनायक-मय' हो गई थी।

चाय चलती रही, वक्त भागता रहा
सूरज उगता रहा-चढ़ता रहा
सूरज के सानिध्य से चाय
कुछ 'उजली' होने लगी थी
और विनायक कुछ 'साँवला'।
फिर एक दिन अचानक
उसने गंभीर होकर कहा -
"घर वाले नहीं मानेंगे"
मैंने कहा- "क्यों नहीं मानेंगे'
उसने सुबकते हुए कहा-" बस,---।

यूँ समझ लो कि मनपसंद चाय
सबकी किस्मत में नहीं होती,
हमारा साथ 'दिन भर' का नहीं,
बस 'चाय भर' का था।
आज यह हमारी आखिरी चाय थी
इस जनम के लिए-----
ईश्वर ने चाहा तो हम चाय पियेंगे जरूर
तुम्हारे ही साथ, तुम्हारे ही हाथों
शायद अगले जनम या फिर
उससे भी अगले जनम में
भाग्यनगर न सही, किसी और शहर
किसी और जगह, पर मिलेंगे जरूर
बैठेंगे जरूर--
खैर, मैं अभी जाती हूँ, फिर मिलने के लिए।
अलविदा मेरे दोस्त, मेरे चायमेट- मेरे सोलमेट।

चाय तो मैं अब भी पीता हूं,
कभी अकेले, कभी दोस्तों के साथ।
कभी प्याली में, कभी कप में
तो कभी कुल्हड़ में भी।
पर पता नहीं क्यों?
अब चाय में वह बात नहीं रही

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।   - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

मेरे ऑफिस की लेखापरीक्षा

श्री अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र

लेखापरीक्षा थी उस दिन, चिंता से हृदय धड़कता था
थे बुरे शकुन घर से चलते ही, दाँया हाथ फड़कता था

मैंने सवाल जो याद किए, वे केवल आधे याद हुए
उनमें से भी कुछ ऑफिस तक, आते-आते बर्बाद हुए

आप बीस मिनट हैं लेट द्वार पर चपरासी ने बतलाया
मैं मेल-ट्रेन की तरह दौड़ता अपने केबिन में आया

दो-दो मुस्तंडे बैठे थे हाथों में फाइलें पकड़े थे
लेखापरीक्षा करनी थी यह सोच-सोच कर अकड़े थे

मेरे हाथों में थमा दिया जो पर्चे लेकर आए थे
उनमें प्रश्नावली ऐसी थी हम जिसके गीत न गाए थे

पर्चा हाथों में पकड़ लिया, आँखें मूंदीं टुक झूम गया
पढ़ते ही छाया अंधकार, चक्कर आया सिर घूम गया

उसमें आए थे वे सवाल जिनमें मैं गोल रहा करता
पूछे थे वे ही प्रश्न जिनका यहाँ टालमटोल रहा

यह मुख्यालय का पर्चा है, मुझको तो अब प्यास नहीं
चाहे सारी दुनिय पलटे पर मैं हो सकता पास नहीं

ओ ! प्रश्न-पत्र लिखने वाले, क्या मुँह लेकर उत्तर दें हम
तू लिख दे तेरी जो मर्ज़ी, ये पर्चा है या एटम-बम

तूने पूछे वे ही सवाल, जो-जो थे मैंने नहीं देखे
जिन हाथों ने ये प्रश्न लिखे, वे हाथ कभी हम भी देखें

फिर आँख मूंदकर बैठ गया, बोला भगवान दया कर दे
मेरे दिमाग़ में इन प्रश्नों के उत्तर ठूँस-ठूँस भर दे

मेरा भविष्य है ख़तरे में, मैं भूल रहा हूँ आँय-बाँय
तुम करते हो भगवान सदा, संकट में भक्तों की सहाय

जब ग्राह ने गज को पकड़ लिया तुमने ही उसे बचाया था
जब द्रुपद-सुता की लाज लुटी, तुमने ही चीर बढ़ाया था

द्रौपदी समझ करके मुझको, मेरा भी चीर बढ़ाओ तुम
मैं विष खाकर मर जाऊंगा, वर्ना जल्दी आ जाओ तुम

आकाश चीरकर अंबर से, आई गहरी आवाज़ एक
रे मूढ़ व्यर्थ क्यों रोता है, तू आँख खोलकर इधर देख

गीता कहती है कर्म करो, चिंता मत फल की किया करो
मन में आए जो बात उसी को, पर्चे पर लिख दिया करो

मेरे अंतर के पाट खुले, पर्चे पर क़लम चली चंचल
ज्यों किसी खेत की छाती पर, चलता हो हलवाहे का हल

आवभगत में कोर-कसर नहीं छोड़नी थी हमको
रिश्तेदारों से बढ़कर मान देना था हमको

क्या खाएँगे, क्या पिएँगे, कहाँ-कहाँ घूमेंगे
कुछ मन में हो तो बता डालें हम मन ही मन चूमेंगे

खाने-पीने रहने-सहने से नहीं इनको था मतलब
अपने प्रश्नों के बल पर दिखलाने आए थे करतब

आखिर में हुआ वही जो सब ऑफिस में होता है
अंतिम दिन हँसता है जो पहले दिन को रोता है

लेखापरीक्षा पूर्ण हुई, जीवन नया पाया हमने
खून-पसीने के बल पर प्वाइंट घटाया था हमने

छोटी-छोटी बातें तो रिपोर्ट में आनी ही चाहिए
यदि नहीं आई तो इनकी ज़रूरत क्या होगी, यह भी कहिए

बॉस खुश थे, वरिष्ठ खुश थे, कनिष्ठों में आनंद था
बस हमी जानते हैं कि इसमें कैसा-कैसा आनंद था

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो

- श्री गोपाल सिंह नेपाली

भारत मर गया है

सुश्री प्रिया सिंह
लेखापरीक्षक

बाहरी दुश्मनों से ज्यादा अब
अन्दर के दरिंदों से डर (घिर) गया है।

हर तरफ शोषण, बलात्कार, चीखें हैं
अन्तिम साँस लेती नैतिकता की सीखें हैं
आदमी क्या पशु - पक्षियों, नदी - नालों,
वृक्षों - पहाड़ों तक को पूजनेवाला समाज
न जाने इसको क्या हो गया है आज?
लाज का गहना हैवानियत से डर गया है
शायद भारत मर गया है।

समाज का वह संस्कार जो कहता है -
हर जानी-अनजानी लड़की बहन है
रिश्तों - इंसानियत के चीथड़ों की आंधी है
या निर्भयाओं - प्रियंकाओं का चीरहरण है
चीत्कारें यूं ही रोज़ चीखती रहीं
पराई बेटियाँ हवस - वस्तु दिखती रहीं
इनका क्रंदन बहुत ही विचलित कर गया है
यकीन है कि भारत मर गया है।

अनगिनत उदाहरण हैं पड़े हुए
बेटियों के ज्ञान से हैं भरे हुए
भोग्या नहीं, मनीषा हैं अपनी बेटियाँ
सर्वत्र निराशाओं में आशा हैं अपनी बेटियाँ
बेटियों को ज्ञान से चहकने दो
खुशबुएँ हैं, फिजाओं में महकने दो

समाज की बर्बरता को रोको
ताकि कोई न कहे कि
उमंगों का वसंत अब हो पतझर गया है
इस तरह भारत मर गया है।

ऐ समाज के पाखंडियों !
मत ऐंठो यह देखकर कि
वह उस गाँव, जिले या राज्य की
निर्भया या प्रियंका थी
कल तुम्हारे घर से भी कोई
निशा या रुखसाना होगी
उसकी चीखें भी धिक्कारेंगी तुम्हें
जब भी नोचेगा उसे कोई भोगी

ये हवसी कहाँ से आते हैं?
ये भी हमारे ही घरों से आते हैं
वात्सल्य को दागदार मत होने दो
मातृदुग्ध को झागदार मत होने दो
देखो, बेटियों के आंसुओं से भींग
मां का आंचल हो तर-ब-तर गया है
कहीं न कहीं भारत मर गया है।

दुर्गा, शिव, राम और कृष्ण का यह देश
शायद रावणों और कंसों से डर गया है
देखो तो सही, क्या भारत मर गया है?

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सरकारी नौकर की व्यथा

श्री प्रवीण पुंजाजी नाफड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार
पैसे लेकर सह लेता है सारे अत्याचार
एड़ी चोटी जोर लगाता एक नौकरी की खातिर
वही नौकरी उसे सताती दे दनादन मार

मेहनत कोई करता क्रेडिट चमचा ले जाता है,
आगा-पीछा करता ऐसे बॉस को भा जाता है
किया कराया सबका वह कर देता है बेकार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

छुट्टी पर जाना आफत है चैन से रहना पाप
काम जरूरी ऑफिस में है मरे किसी का बाप,
रिश्ते-नाते टूटे सब अब यही अपना संसार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

रोटी के चक्कर में रोटी खाने के लाले हैं
जाने कैसी दाल हो गयी सारे ही काले हैं
काम समय पर चाहिए पर मिलती लेट पगार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

छोटी-सी दुनिया होती है, सारे सपने बसते हैं,
जिम्मेदारी का बोझ लिए दिन और रात भटकते हैं,
यहाँ तो साइकिल पर आफत है पत्नी कहती कार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

उम्मीद नहीं छोड़ी थककर गिरते हैं फिर चलते हैं,
थकना, गिरना, गिरकर उठना सपने ऐसे ही पलते हैं
रोज-रोज की भागादौड़ी यही होता संसार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

फुरसत मे मिलो बताऊँ मैं, कुछ दिल की बात सुनानी है
अपना काम श्रेष्ठ है भाई नौकरी तो बेमानी है
मेहनत जितना फल देता है अपना कारोबार
सरकारी नौकर बेचारा होता है लाचार

भारत में AQI: एक बढ़ता जनस्वास्थ्य संकट

श्री अभय भंडारी
लेखापरीक्षक

“एयर क्वालिटी इंडेक्स” या AQI अब केवल एक तकनीकी शब्द नहीं रहा। यह वह संख्या बन चुका है जो तय करती है कि सुबह की सैर सुरक्षित है या नहीं, बच्चों को बाहर खेलने दिया जाए या नहीं, और मास्क पहनना ज़रूरी है या नहीं। सर्दियों के महीनों में यह सोशल मीडिया, समाचार प्लेटफॉर्म और मौसम ऐप्स पर लगातार दिखाई देता है। धुंध से ढके शहरों की तस्वीरें, स्वास्थ्य चेतावनियाँ और भारतीय शहरों की आपसी तुलना आम हो चुकी हैं।

जो समस्या पहले एक मौसमी असुविधा मानी जाती थी, वह अब भारत के लिए एक गंभीर और स्थायी जनस्वास्थ्य चुनौती बन चुकी है, जो प्रतिदिन करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही है।

एयर क्वालिटी इंडेक्स एक संख्यात्मक पैमाना है, जिसका उपयोग यह बताने के लिए किया जाता है कि हवा कितनी स्वच्छ या प्रदूषित है और इससे मानव स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। AQI का मान जितना अधिक होता है, हवा की गुणवत्ता उतनी ही खराब मानी जाती है और स्वास्थ्य के लिए जोखिम उतना ही अधिक होता है। यह जटिल प्रदूषण संबंधी आँकड़ों को सरल रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे आम नागरिक आवश्यक सावधानियाँ अपना सकें और सरकारें गंभीर प्रदूषण की स्थिति में चेतावनी जारी कर सकें तथा त्वरित कदम उठा सकें।

भारत में AQI की गणना आठ प्रमुख प्रदूषकों की 24 घंटे की औसत सांद्रता के आधार पर की जाती है। इनमें PM_{10}, $PM_{2.5}$, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, ओज़ोन, अमोनिया और सीसा शामिल हैं। विभिन्न निगरानी केंद्रों से प्राप्त आँकड़ों को एक मानक सूत्र के माध्यम से एकल AQI मान में बदला जाता है। किसी भी दिन का अंतिम AQI उस प्रदूषक पर आधारित होता है, जिसकी स्थिति सबसे खराब होती है, जिसे प्रमुख प्रदूषक कहा जाता है।

हाल के वर्षों में भारत में वायु प्रदूषण की स्थिति अत्यंत चिंताजनक बनी हुई है। कई शहर नियमित रूप से सुरक्षित AQI सीमाओं को पार कर जाते हैं, विशेष रूप से सर्दियों के दौरान। वर्ष 2024 में IQAir की वैश्विक रैंकिंग में यह सामने आया कि दुनिया के 100 सबसे प्रदूषित शहरों में से 94 शहर भारत में स्थित थे। दूसरे शब्दों में, दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची आज भारत का शहरी मानचित्र बनती जा रही है।

भारत में उच्च AQI स्तर के लिए भौगोलिक परिस्थितियाँ और मानवीय गतिविधियाँ दोनों जिम्मेदार हैं। कम पवन गति और तापमान उलटाव जैसी प्रतिकूल मौसमी स्थितियाँ, विशेषकर सर्दियों में, प्रदूषकों को ज़मीन के पास फँसा देती हैं, जिससे घनी और लगातार बनी रहने वाली स्मॉग की स्थिति उत्पन्न होती है। इंडो-गैंगेटिक मैदान का स्थल-आवेष्ठित स्वरूप वायु परिसंचरण को सीमित करता है,

जबकि कोहरा और अधिक आर्द्रता प्रदूषकों के फैलाव को और बाधित करती है। परिणामस्वरूप, खराब वायु गुणवत्ता अब केवल मौसमी समस्या न रहकर एक स्थायी और व्यापक संकट बन चुकी है।

इसके साथ ही मानवीय गतिविधियाँ प्रदूषण को और गंभीर बनाती हैं। वाहनों की संख्या में तेज़ वृद्धि से कण पदार्थ और नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन बढ़ता है। औद्योगिक इकाइयाँ, ताप विद्युत संयंत्र और ईंट भट्टे वायुमंडल में बड़ी मात्रा में प्रदूषक छोड़ते हैं। निर्माण गतिविधियाँ और सड़क की धूल शहरी क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता को खराब करती हैं, जबकि उत्तर भारत में पराली जलाने से कटाई के बाद AQI में अचानक तेज़ वृद्धि देखी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में खाना पकाने के लिए बायोमास और ठोस ईंधन का उपयोग भी प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

प्रदूषित हवा के लंबे समय तक संपर्क में रहने से स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ते हैं। इससे दमा, ब्रोंकाइटिस जैसे श्वसन रोगों के साथ-साथ हृदय रोग और फेफड़ों के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। बच्चे, बुजुर्ग और गर्भवती महिलाएँ विशेष रूप से अधिक संवेदनशील होती हैं। उच्च प्रदूषण की अवधि के दौरान अस्पतालों में सांस संबंधी समस्याओं के मरीजों की संख्या में तेज़ वृद्धि देखी जाती है। इंडो-गैंगेटिक मैदान में रहने वाले लोगों की औसत आयु 7.6 वर्ष तक घटने का अनुमान है, यदि वर्तमान स्थिति बनी रही। यह प्रदूषण केवल आँकड़ों में नहीं, बल्कि इनहेलर, ऑक्सीजन सिलेंडर और समय से पहले थक जाने वाली साँसों में दिखाई देता है।

वायु प्रदूषण के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव भी उतने ही गहरे हैं। बार-बार बीमार पड़ने से कार्यदिवसों की हानि होती है और उत्पादकता घटती है। परिवारों को चिकित्सा पर अधिक खर्च करना पड़ता है, जबकि गंभीर प्रदूषण की स्थिति में स्कूलों के बंद होने से शिक्षा बाधित होती है। इसके अतिरिक्त, खराब वायु गुणवत्ता पर्यटन को प्रभावित करती है और शहरों की समग्र जीवन-गुणवत्ता को कम करती है।

वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार ने कई पहलें की हैं। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) का उद्देश्य विभिन्न शहरों में प्रदूषण स्तर को कम करना है। वाहनों के लिए सख्त उत्सर्जन मानक, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना और अत्यधिक प्रदूषण की स्थिति में आपातकालीन उपाय सही दिशा में उठाए गए कदम हैं। हालांकि, कमजोर क्रियान्वयन और राज्यों के बीच समन्वय की कमी इन प्रयासों की प्रभावशीलता को सीमित करती है। इसका उदाहरण यह है कि NCAP के अंतर्गत उपलब्ध कराए गए धन का केवल लगभग 57 प्रतिशत ही उपयोग हो पाया है।

जहाँ भारत आज लक्ष्य और समय-सीमा के बीच उलझा दिखाई देता है, वहीं चीन ने समस्या को पहचानकर कठोर लेकिन निर्णायक रास्ता चुना। लगभग एक दशक पहले चीन भी भारत जैसी गंभीर वायु प्रदूषण की स्थिति से जूझ रहा था। बीजिंग में वर्ष 2013 में केवल 13 “अच्छी हवा वाले दिन” दर्ज किए गए थे,

जबकि आज यह संख्या 300 से अधिक हो चुकी है। यह परिवर्तन वर्ष 2014 में तब शुरू हुआ, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री ली खछ्यांग ने प्रदूषण के खिलाफ “युद्ध” की घोषणा की।

इसके बाद चीन ने एक स्पष्ट और बहु-स्तरीय रणनीति अपनाई। प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों को बंद किया गया या स्थानांतरित किया गया, भले ही इसके कारण बड़े पैमाने पर रोजगार का नुकसान हुआ। घरेलू स्तर पर कोयले जैसे गंदे ईंधनों की जगह सब्सिडी वाली गैस और बिजली आधारित हीटिंग को बढ़ावा दिया गया। स्वच्छ सार्वजनिक परिवहन में बड़े पैमाने पर निवेश किया गया। कृषि अवशेष जलाने की समस्या से निपटने के लिए केवल प्रतिबंध नहीं लगाए गए, बल्कि इसे आर्थिक रूप से अलाभकारी बनाया गया—किसानों को फसल अवशेष बेचने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिन्हें बायोमास संयंत्रों ने स्थिर दरों पर खरीदा। सैटेलाइट आधारित निगरानी के माध्यम से सख्त नियंत्रण सुनिश्चित किया गया और स्थानीय अधिकारियों को जवाबदेह बनाया गया।

वायु प्रदूषण अब केवल पर्यावरण से जुड़ा प्रश्न नहीं रहा; यह भारत के स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और शहरी भविष्य से जुड़ा संकट बन चुका है। अनुभव बताता है कि आधे-अधूरे उपाय इस समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए मज़बूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, सख्त प्रवर्तन, राज्यों के बीच प्रभावी समन्वय और सक्रिय जनभागीदारी अनिवार्य है। चीन का उदाहरण दिखाता है कि कठिन फैसले अल्पकाल में असहज हो सकते हैं, लेकिन दीर्घकाल में जीवन बचाते हैं। यदि भारत समय रहते निर्णायक कदम उठाता है, तो स्वच्छ हवा कोई विलासिता नहीं, बल्कि हर नागरिक का वास्तविक अधिकार बन सकती है।

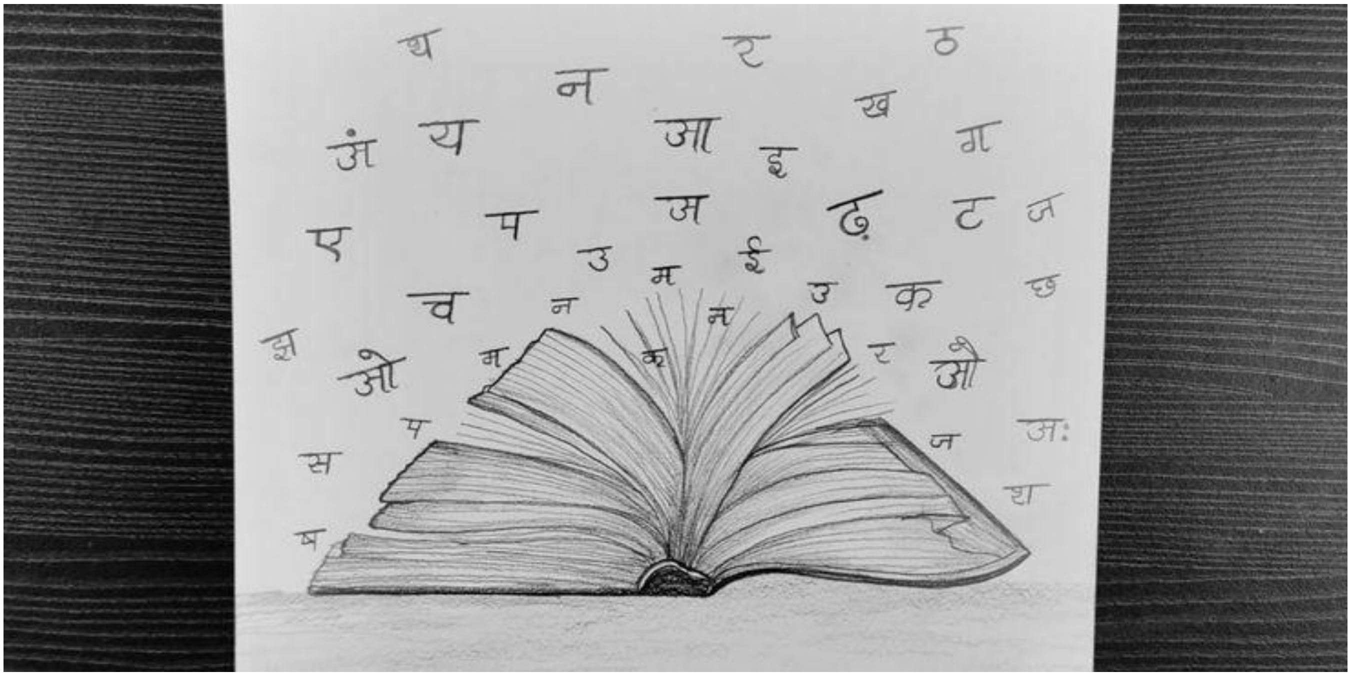

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गाँधी

अस्थाई कर्मचारी का जीवन

श्री आकाश भिंगारदिवे
अस्थाई आँ.प्र.प्र.

संसार में सभी किसी न किसी तरह की समस्या से ग्रस्त हैं । कोई सरकारी कर्मचारी अपने कार्यालय के काम से त्रस्त है तो कोई बॉस अपने अधीनस्थों के काम न करने से त्रस्त है । सरकारी कार्यालयों में मुख्यतः दो तरह के लोग काम करते हैं - पहली तरह के लोग अधिकारी वर्ग कहलाते हैं और दूसरी तरह के लोग कर्मचारी वर्ग । आधिकारिक भाषा में इसे ही राजपत्रित और अराजपत्रित वर्ग कहा जाता है । इसी क्रम में एक और वर्ग होता है जिसे हम अस्थाई कर्मचारी कहते हैं ।

यह वर्ग वैसे जीवात्माओं से बना होता जो सरकार की किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा को उत्तीर्ण कर स्थाई कर्मचारी बनने का सौभाग्य नहीं पा पाते अथवा वैसे जीव जिनके लिए सरकार के पास कोई योजना नहीं होती । यह वर्ग कहीं का नहीं होता - न अपने घर का और न सरकारी घाट का । इनकी समस्या बाकी लोगों से अलग है । इनकी कुछ ज्वलंत समस्याएँ हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैः-

(क) **रोजगार का कोई ठिकाना नहीं** - अस्थाई कर्मचारी किसी निविदा में जीते हुए ठेकेदार द्वारा भेजे जाते हैं । कुल मिलाकर ये लोग उस ठेकेदार के रहमोकरम पर रहते हैं । ठेकेदार जब चाहे रख ले और जब चाहे हटा दे ।

(ख) **न्यूनतम मेहनताना** - अस्थाई कर्मचारियों को सरकारी मजदूरी कानूनों के अनुसार न्यूनतम मेहनताना दिया जाता है । इस मजदूरी में उनका घर-परिवार कैसे चलता है, यह वही जानते हैं।

(ग) **कोई छुट्टी नहीं** - अस्थाई कर्मचारियों को नियमित कर्मचारियों की तरह कोई छुट्टी नहीं मिलती । इनकी छुट्टी तभी होती है जब कार्यालय रविवार को अथवा किसी छुट्टी के दिन बंद रहता है । यहाँ तक कि अपनी बीमारी का इलाज कराने के लिए भी इन्हें अपनी मजदूरी कटवानी पड़ती है ।

(घ) **कोई भत्ता नहीं** - अस्थाई कर्मचारियों को नियमित कर्मचारियों की तरह भिन्न-भिन्न तरह के भत्ते नहीं मिलते । जो मिला उसी में पूरे महीने का गुज़र-बसर करना होता है ।

(ङ) **नियमित कर्मचारियों का व्यवहार** - कई कार्यालयों में नियमित कर्मचारी अस्थाई कर्मचारियों को किसी निकम्मे विदेशी की तरह देखते हैं । उनके मन में पहले से ही धारणा बनी होती है कि अस्थाई लोग कुछ करते नहीं और ये हमारे अपने नहीं हैं ।

इतना कुछ जान लेने के बाद आप सभी पाठकों को यह बताना ज़रूरी है कि मैं भी एक सरकारी कार्यालय में अस्थाई कर्मचारी के रूप मे काम करनेवाला कर्मचारी हूँ । अस्थाई कर्मचारियों की कहानी मेरी जुबानी सुनिएः-

हमलोगों को प्रति वर्ष यह चिंता सताया करती है कि कौन-सा ठेकेदार आएगा और वह हमे कार्यालय में काम करने के लिए रखेगा या नहीं?

बहुत से कार्यालय में अस्थाई कर्मचारी की कोई हैसियत ही नहीं होती! हर कोई अपना काम उनसे करवाता है ! और काम होने के बाद उन्हें भूल जाता है । साथ-साथ यह जुमला तो चलता ही रहता है कि कि "ये लोग कोई काम नहीं करते, वह कुछ काम के नहीं "! इतना होने पर भी हम सभी बातें भूल कर एक नए दिन का काम शुरू करते है और कोई हमे कुछ भी बोले और कैसे भी व्यवहार करे हम हमेशा उनके काम को अपने मन और पूरी लगन से करते है क्योंकि हम अस्थाई कर्मचारी है! हमे कार्यालय में अस्थाई रूप में काम करने के लिए रखा जाता हैं । हमें हमेशा यह डर होता है कि कोई हमें निकाल न दे । काम से निकालने के बाद हमारे परिवार का क्या होगा यह चिंता हमें हमेशा सताती है । क्योंकि इतने महंगाई के समय में काम मिलना बहुत मुश्किल हो चुका है । इस कमर-तोड़ महंगाई में हमे अपने सीमित वेतन में अपना घर, परिवार संभालना बहुत मुश्किल होता हैं । यदि कोई बुरा ठेकेदार आएगा तो वह हर महीने हमारे वेतन से पैसे काटेगा, अपने कमीशन को तौर पर और काम पर रखने के बदले में । यदि दुर्भाग्य से कोई बीमारी हो गई और छुट्टी ले ली तो वेतन कटने का डर होता है । वेतन कम आने पर हमारी सारी व्यवस्थाएँ चरमरा जाती हैं और बहुत मुश्किल होता हैं । कारण कुछ भी हो, हमें हमेशा कार्यालय में उपस्थित रहना जरूरी होता है । यह सभी अस्थाई कर्मचारी पर लागू नहीं होता! क्योंकि हर कार्यालय में एकाध अस्थाई कर्मचारी होते हैं जो आधिकारिक कर्मचारी के नजदीक होते हैं । वैसे कर्मचारी को बहुत मुश्किल नहीं होती । उन्हें सभी छुट्टियाँ भर-भरकर मिलती हैं और बहुत काम भी नहीं करना पड़ता । ना उसे कोई कुछ बोलता ही है और ना ही उसे काम से निकाले जाने का डर होता है । जो अधिकारी के नजदीकी कर्मचारी होते है उसे अधिक महत्व दिया जाता हैं! उसे कभी कार्यालय के बाहर कम करने के लिए नहीं भेजते । वह अपने मन का मालिक होता हैं । उसकी बात कोई नहीं काटता । उससे दूसरे अस्थाई कर्मचारी डरते हैं । एक और कार्मिक होता है जो सबको सिर्फ तब याद आता है जब कोई विशेष काम आ जाए । तत्काल वह काम उसे दिया जाता है और काम हो जाने पर लोग उसे भूल जाते हैं । वह बस काम के समय ही याद आता हैं । अपनी उपयोगिता के कारण उसे कभी भी समय पर छुट्टी भी नहीं मिलती । वह काम तो मन लगाकर करता है पर उसे उसका कुछ फायदा नहीं होता । बल्कि वापस कभी काम आए तो उसे ही भेजा जाता हैं । कभी-कभी किसी विशेष काम के कारण उसे दिन-दिन भर बाहर रहना पड़ता है । ऐसे मे भी ना उसे खाने को कुछ मिलता है ना उसके आने-जाने का किराया मिलता है । फिर भी वह बेचारा लगन से काम करते रहता है । कभी-कभी तो उसे वह काम भी

करना पड़ता हैं जो उसका नहीं होता । फिर भी वह बिना कुछ बोले काम करता है । काम होने पर उसे चिढ़ाया भी जाता हैं । उसके काम के दर्जे के अनुसार उसका मजाक भी बनाया जाता हैं । फिर भी वह अपना काम करते रहता है । उसे किसी बात की चिंता नहीं होती कि उसे कौन क्या बोल रहा है । बस उसे इतना पता होता है कि अधिकारी ने बोला है तो काम पूरा हो जाना चाहिए ।

पर हमारा सौभाग्य है कि हमारे कार्यालय में ऐसे चीजें नहीं होती । उल्टा हमारे कार्यालय के अधिकारी हमेशा हमारे हित का सोचते हैं और हमेशा हमारे हित के लिए प्रयत्नशील रहते हैं । पिछले साल जब एक ठेकेदार हमसे काम पर रखने के बदले पैसे मांगने लगा तब हमारे कार्यालय अधिकारी ने हमारी और से बात करने के बाद उस भ्रष्ट और उद्दंड ठेकेदार को वर्ज्य सूची मै शामिल करके उसे निकाल दिया और नए ठेकेदार को शामिल किया गया । ऐसा करने में बहुत सारी औपचारिकताओं को पूरा करने के क्रम में सभी अधिकारी के काम बढ़ गए पर सिर्फ हमारे लिए उन्हेंने कोई परवाह न करते काम करते रहे और हमे न्याय दिलाया। इस घटना के बाद अपने कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति सभी अस्थाई कर्मचारियों का आदर बहुत बढ़ गया। हमे कार्यालय में कभी भी नियमित कर्मचारियों से अलग नहीं समझा जाता। बल्कि बहुत से अधिकारी तो हमें अपने परिवार के सदस्य की तरह संभालते हैं । परेशान होने पर समझाते हैं । गलती करने पर समझाते हैं और यदि हम मुश्किल में हों तो हमारे साथ एक परिवार की तरह खड़े होते हैं । सच में हम बहुत खुशनसीब हैं जो हमें इस कार्यालय का एक भाग बनने का मौका मिला। यह हमारे लिए बस एक कार्यालय नहीं है, बल्कि यह हमारा परिवार है जो हमेशा हमारे साथ रहता है । हमारे कार्यालय के कुछ कर्मचारी हाल-फिलहाल में सेवानिवृत्त हुए हैं । सेवानिवृत्ति के बाद भी उनका संपर्क कायम है । वे अभी भी हमसे बात करते है और हमारा हालचाल पूछते हैं । हमारी यही कामना है कि हमारे इस कार्यालय परिवार को कभी किसी की नजर न लगे और सभी एक खुशहाल ज़िन्दगी जीते रहें ।

हम सभी अस्थाई कर्मचारी भी इस आशा में दोगुने जोश के काम करते हैं कि संभव है कि कभी सरकार की नीति बदल जाए और हमें भी नियमित कर्मचारी बनने का सौभाग्य मिल पाए । पिछली बार ऐसा सुयोग 2017 में हुआ था जब बहुत से कार्यालयों में अस्थाई कर्मचारियों को स्थाई कर दिया था । हमारे हाथ में लगन और उत्साह से काम करना है, बाकी ईश्वर की इच्छा ।

हमारी यह भी कामना है कि कोई ऐसी व्यवस्था बने जिसमें हम अस्थाई कर्मचारियों को ठेकेदारों के शोषण से बचाने के उपाय हों ताकि हमारे जैसे मेहनतकश अस्थाई कर्मचारियों को कोई ठेकेदार अपनी मनमानी से न नियुक्त कर सके और न निकाल सके ।

"भाषा व्याकरण और भाषाशास्त्र से कहीं अधिक महान है - जवाहरलाल नेहरू

अच्छा मनुष्य कौन होता है

सुश्री मंजरी सारस्वत
लेखापरीक्षक

अच्छा मनुष्य होना केवल बाहर से अच्छा दिखने का नाम नहीं है। कई लोग अजनबियों के साथ या जानवरों के प्रति दयालु व्यवहार करते हैं, जिससे लोग उन्हें अच्छा समझें। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि ऐसा मनुष्य सच में अच्छा हो। कई बार यह केवल अपनी छवि बनाने का तरीका होता है, जिसे हम इमेज मैनेजमेंट कह सकते हैं।

असली अच्छे मनुष्य की पहचान यह होती है कि वह अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

जो व्यक्ति अपने परिवार, माता-पिता, जीवनसाथी और बच्चों के साथ धैर्य, सम्मान और समझदारी से पेश आता है, वही वास्तव में अच्छा मनुष्य होता है। क्योंकि अजनबी हमारे गुस्से, थकान और असली स्वभाव को नहीं देखते, लेकिन हमारे अपने लोग हमें हर रूप में देखते हैं।

अच्छे मनुष्य का असली रूप तब सामने आता है जब वह घर में भी उतना ही विनम्र और दयालु हो, जितना वह बाहर दिखता है। बच्चों के शोर में धैर्य रखना, अपने प्रियजनों की गलतियों को समझना और गुस्से में भी अपनों को ठेस न पहुँचाना–यही सच्ची अच्छाई है।

अजनबियों के साथ की गई दयालुता हमें अच्छा दिखा सकती है, लेकिन अपने लोगों के साथ की गई दयालुता हमारे चरित्र को दर्शाती है। बाहर की मुस्कान छवि बनाती है, लेकिन घर की नरमी मनुष्य को परिभाषित करती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि अगर कोई व्यक्ति हर जगह अच्छा बनने की कोशिश करता है, लेकिन अपने ही घर में अच्छा नहीं है, तो वह सच्ची दयालुता नहीं कहलाती। असली अच्छा मनुष्य वही होता है जो अपने लोगों के साथ भी उतना ही अच्छा हो, जितना वह दुनिया को दिखाता है।

इतिहास और वर्तमान समय में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ कुछ लोगों को समाज ने बहुत महान और अच्छा मनुष्य माना, लेकिन समय के साथ उनकी सच्चाई सामने आई। हाल के वर्षों में Jeffrey Epstein जैसे मामलों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन लोगों को प्रभावशाली, सफल और सम्मानित समझा जाता था, उनका नाम गंभीर गलत कार्यों में सामने आया। इससे यह सीख मिलती है कि बाहरी छवि, पैसा या प्रसिद्धि किसी मनुष्य की अच्छाई का प्रमाण नहीं होती। इसी तरह, जो लोग दान, मदद या अच्छे कामों को दिखावे के लिए करते हैं, और अंदर ही अंदर गलत सोच या व्यवहार रखते हैं, उन्हें अच्छा मनुष्य नहीं कहा जा सकता। असली अच्छाई वह है जो बिना कैमरे, बिना तारीफ और बिना किसी स्वार्थ के की जाए।

एक अच्छे मनुष्य के प्रमुख लक्षणों में ईमानदारी, दयालुता, दूसरों के प्रति सहानुभूति और सम्मान शामिल है। वे कर्तव्यनिष्ठ, सकारात्मक दृष्टिकोण वाले और कठिन समय में शांत रहने वाले होते हैं। ऐसे लोग न केवल दूसरों की मदद के लिए तैयार रहते हैं, बल्कि वे अपनी गलतियों को सुधारने और क्षमा करने की क्षमता भी रखते हैं। अच्छा मनुष्य अपने और पराए में कोई भेदभाव नहीं करते । सभी उनके अपने ही होते हैं ।

अच्छे मनुष्य के प्रमुख गुण:

(क) ईमानदारी और सच्चाई: वे झूठ और धोखे से दूर रहते हैं और अपने जीवन में पारदर्शी होते हैं।

(ख) दयालुता और सहानुभूति: दूसरों के दुखों को समझना, उन पर करुणा दिखाना और निस्वार्थ मदद करना उनके स्वभाव का हिस्सा है।

(ग) सम्मान और विनम्रता: वे उम्र, जाति या पद की परवाह किए बिना हर किसी से आदरपूर्वक बात करते हैं।

(घ) सकारात्मक दृष्टिकोण: वे हर स्थिति का सामना शांति और सकारात्मक तरीके से करते हैं।

(ङ) जिम्मेदारी और जवाबदेही: वे अपने काम और शब्दों के लिए जिम्मेदार होते हैं।

(च) क्षमाशील: वे दूसरों की गलतियों को माफ करना और आगे बढ़ना जानते हैं।

(छ) निस्वार्थता: वे बिना किसी स्वार्थ के दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित करते

अंत में हम यह कह सकते हैं कि अच्छाई कोई दिखावा नहीं, बल्कि रोज़ का व्यवहार है। अजनबियों के सामने अच्छा बनना आसान होता है, लेकिन अपने लोगों के साथ अच्छा बने रहना ही असली इंसानियत है। जो व्यक्ति घर के अंदर भी वही सम्मान, धैर्य और संवेदनशीलता दिखाता है जो वह बाहर दुनिया को दिखाता है, वही सच्चे अर्थों में अच्छा मनुष्य कहलाता है। क्योंकि अच्छाई अगर घर की दहलीज़ पर ही खत्म हो जाए, तो वह गुण नहीं, केवल एक मुखौटा बनकर रह जाती है।

मेरी जालेश्वर यात्रा

"देवदारों की छाया में जागेश्वर : आस्था, इतिहास और प्रकृति का अनुपम संगम"

श्री परितोष कुमार मल्ल
लेखापरीक्षक

पिछले वर्ष दिसंबर माह में जीवन ने मुझे एक अनायास ही मिला हुआ एक अनुपम सौभाग्य दिया। यह सौभाग्य था उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में स्थित प्राचीन एवं पावन जागेश्वर धाम के दर्शन का अवसर। यात्रा कार द्वारा प्रारंभ हुई। मैं मूलतः उत्तर प्रदेश के देवरिया (जन्मभूमि) से हूँ, अतः जैसे ही पहाड़ों का प्रथम दर्शन हुआ और शुद्ध, शीतल वायु ने फेफड़ों को छुआ – मन और तन, दोनों ने मानों मुंबई (कर्मभूमि) के प्रदूषण को एक साथ ही "तौबा" कह दी।

यात्रा का पहला पड़ाव **कैंची धाम** रहा। वहाँ से आगे बढ़ते ही जैसे-जैसे पहाड़ ऊँचे होते गए, अल्मोड़ा नगर दिखाई देने लगा। दूर से देखने पर छोटे-छोटे घर माचिस के डिब्बों जैसे प्रतीत हो रहे थे। उसी समय मैंने प्रकृति का एक दुर्लभ दृश्य भी देखा – विंटर लाइन । साँझ के समय आकाश में फैली लालिमा इतनी मनोहारी थी कि कुछ क्षणों के लिए समय थम-सा गया।

दिन ढलते-ढलते मैं जागेश्वर पहुँच चुका था। रात्रि हो चुकी थी। तापमान शून्य से नीचे था और वातावरण में लोकगीतों की मधुर ध्वनि गूँज रही थी। मेरा विश्राम-स्थल कुमाऊँ मंडल विकास निगम का अतिथि गृह था, जो मंदिर परिसर से मात्र लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों भोले बाबा साक्षात् पास ही विराजमान हों। चारों ओर फैले विशाल देवदार (चीड़) के वृक्ष, इस गोलाकार घाटी को एक अलौकिक आभा प्रदान कर रहे थे।

सामान रखकर मैं तुरंत मंदिर की ओर गया, किंतु उस समय मंदिर के द्वार बंद थे। फिर भी मैंने लगभग एक घंटे तक उस कोहरे भरे, शीतल वातावरण में परिसर को निहारा। ठंड ने नाक को लाल कर दिया था, पर मन पूर्णतः तृप्त था।

प्रातःकाल उठने का मन तो नहीं था, पर साहस बटोरकर तैयार हुआ। श्रद्धा में नंगे पाँव मंदिर की ओर चल पड़ा – हालाँकि शीघ्र ही ज्ञात हुआ कि अत्यधिक ठंड में ऐसा करना उचित नहीं था। पैरों में सुन्नता छा गई। फिर भी जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, वैसे-वैसे मंदिरों की शांत, सौम्य और दिव्य उपस्थिति ने मेरी समस्त शारीरिक असुविधा को गौण कर दिया।

जागेश्वर परिसर में स्थित छोटे-छोटे पत्थर के मंदिर, जिन्हें प्राचीन कुमाऊँ राजाओं एवं कत्यूरी वंश के शासकों द्वारा निर्मित कराया गया था, आज भी अपनी स्थापत्य गरिमा के साथ खड़े हैं। मान्यता है कि इन मंदिरों का निर्माण 9वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य हुआ। यह मंदिर समूह भगवान शिव को

समर्पित है और यहाँ 124 से अधिक मंदिर विद्यमान हैं। मुख्य मंदिर को जागेश्वर महादेव कहा जाता है।

पंडित जी द्वारा किया गया रुद्राभिषेक अत्यंत भावविभोर करने वाला था। ऐसा कहा जाता है कि जागेश्वर धाम में इस प्रकार का विधिवत एवं शुद्ध पूजन केवल सौभाग्यशाली भक्तों को ही नसीब होता है। उस क्षण मैंने अपनी जीवन की सारी चिंताओं को एक ओर रख दिया।

समय निकालकर मैंने प्रकृति की अनुपम छटा को निहारा और मंदिर परिसर में लगे शिलालेखों व ऐतिहासिक विवरणों को पढ़ा। मन में एक अजीब-सा संतोष था। मुंबई लौटने का मलाल अवश्य था, किंतु उस समय जो पल मैं जी रहा था, वह मेरे जीवन के अब तक के सबसे मनोरम दृश्यों में से एक बन चुका था।

सूर्य की तिरछी किरणों के साथ-साथ मैंने कुमाऊँ की प्रसिद्ध चीज़ों का स्वाद भी लिया—माल्टा, काफल और वहाँ की सुप्रसिद्ध बाल मिठाई। बाल मिठाई ले जाना मैं कैसे भूल सकता था !

यदि आप भी अल्मोड़ा जाएँ, तो लाला बाज़ार स्थित “मोहन् लाल शाह की बाल मिठाई की दुकान” से बाल-मिठाई अवश्य लें । यहाँ की बाल मिठाई पूरे कुमाऊँ में प्रसिद्ध है।

जागेश्वर धाम की यह यात्रा मेरे लिए केवल एक धार्मिक भ्रमण नहीं, बल्कि आस्था, इतिहास और प्रकृति के संगम का ऐसा अनुभव थी, जो जीवन भर स्मृतियों में जीवित रहेगा।

मुंबई में सरकारी सैलरी

श्री सचिन पन्नू
लेखापरीक्षक

पहले नौकरी होती थी - एक कमाने वाला नौ खाने वाले ।
फिर चाकरी हुई - एक कमाने वाला चार खाने वाले ।
फिर तनख्वाह - केवल अपना तन ढ़ँकने और खाने भर का मिलने लगा ।
फिर वेतन - अपने तन भर का भी ना रहा (बे तन) ।
और अब पे - उलटा नौकरी करने वाला ही 'पे' करने लगा है ।

आप समझ गए होंगे कि इस लेख में आप क्या पढ़नेवाले हैं । Salary बड़ा भारी भरकम शब्द है साहेब जिसको नहीं मिलती उससे पूछो।

वेतन जब मिलता है तब उसकी ख़ुशी कुछ उसी तरह की होती है जैसी बहुत दिनों के बाद जीवनसाथी मिला हो । वेतन दरअसल पूर्णिमा के उस चाँद की तरह होता है जो शुरुआत में तो पूरा होता है और चांदनी से आपका चेहरा खिला-खिला रहता है, लेकिन पखवाड़ा आते आते लगभग खुद का तो दूर आपके घर के चाँद से ही आप डरने लगते है।

यदि सैलरी घर के मुखिया की हो तो बात ही क्या उस पर घर के सभी सदस्यों का वैसा ही अधिकार होता है जैसे मंदिर में बैठे हुए भगवान के प्रसाद पर भक्तों का। यदि यही सैलरी वाइफ की हो तो पति उसे वैसे ही देखता है जिस तरह वह अपने कॉलेज जमाने की गर्लफ्रेंड को शादी शुदा होने देखता है। अर्थात मन में हक़ तो महसूस होता है लेकिन छु नहीं सकता।

मुंबई में सरकारी कर्मचारी की सैलरी

मुंबई में दो चीजें बहुत तेज भागती है- लोकल ट्रेन और सरकारी कर्मचारी की सैलरी । फर्क बस इतना है कि लोकल ट्रेन कभी-कभी लेट हो जाती है, लेकिन सैलरी जी तो अकाउंट में आते ही 'जय महाराष्ट्र' बोलकर गायब हो जाती है ।

सैलरी आने के दिन - "आज मैं अमीर हूँ" । महीने की पहली तारीख को जैसै ही मैसेज आता है "Salary Credited", दिल में बैकग्राउंड म्यूजिक बजता है। सरकारी कर्मचारी सोचता है "इस महीने बचत पक्की । बाहर खाना कम, ऑनलाइन शॉपिंग बंद, बस जरूरी खर्च" लेकिन मुंबई मुस्काराती है.. क्योकि उसे पता है असली खेल अब शुरू होगा।

घर का किराया : असली बॉस - मुंबई में घर किराए पर लेना ऐसा है जैसे आपने आधी सैलरी पहले ही दान कर दी हो। 1BHK का किराया सुनकर नई ज्वाइनिंग वाला कर्मचारी दो मिनट के लिए चुप हो जाता है। मकान मालिक का चेहरा देख कर समझ में आता है- "सरकरी नौकरी आपकी है, असली स्थिरता हमारी है"।

लोकल ट्रेन और ऑटो - छोटी रकम, बडा असर - मुंबई लोकल का पास बनवाते वक्त लगता है कि चलो सस्ता है । फिर कभी ऑटो, कभी कैब, कभी वर्षा में स्पेशल खर्च .... महीने के अंत में लगता है जैसे ट्रैफिक ने ही जेब काट दी हो ।

महँगाई : अदृश्य चोर - सब्ज़ीवाला, दूधवाला, गैस-सिलेंडरवाला - सबको पता होता है कि पहली तारीख आ चुकी है । दाल के दाम सुनकर कर्मचारी सोचता है - इतनी महँगी तो मेरी डिग्री भी नहीं थी

परिवार और इमर्जेंसी - जैसे ही सैलरी आती है, अचानक सबको कुछ न कुछ ज़रूरी याद आ जाता है । बच्चे की फीस, मोबाइल रिचार्ज, और दूर के रिश्तेदार की शादी

फिर सरकारी कर्मचारी को समझ में आती है - मेरी सैलरी नहीं, यह तो सार्वजनिक संपत्ति है ।

महीने का आखिरी हफ्ता : **महान तपस्या** - महीने के आखिरी पाँच दिन मुंबई का सरकारी कर्मचारी आध्यात्मिक हो जाता है । सांसारिक मोह-माया से बिल्कुल मुक्त, उपभोक्तावाद के चंगुल से बिल्कुल आज़ाद ... बाहर खाना बंद, ऑनलाइन ऐप्स डिलीट, फ्रिज में जो है वही प्रसाद, वह मन ही मन प्रार्थना करता है - हे वेतनदेव ! जल्दी वापस आओ । इन पाँच दिनों में उसका मन धार्मिक प्रवचनों, भजनों, कव्वालियों और उदासी भरे गीतों को सुनने में अधिक लगने लगता है । यह भी कहा जाता है कि मुम्बई में अधिकतर कामकाजी लेखक महीने के अंतिम पाँच दिनों में ही अपनी कविताएँ, कहानियाँ, लेख, चुटकुले आदि लिख पाते हैं, जैसे कि मैं यह लेख लिख रहा हूँ ।

मुंबई में सरकारी कर्मचारी की सैलरी बहुत तेजी से खत्म नहीं होती । बल्कि मुंबई इतनी तेज है कि सैलरी खुद ही घबरा कर भाग जाती है । लेकिन सच यही है - मुंबई सिखाती है मैनेजमेंट, बजटिंग और धैर्य । और महीने के आखिर में जो मुस्कुरा ले वही असली मुंबईकर सरकारी कर्मचारी है । मुम्बई के नौकरीपेशा लोगों के बारे में कुछ बड़ी ही खूबसूरत शायरी याद आ रही है, आप भी आनंद लेः-

हम अपने दिल के शौक़ भला कब निकालेंगे
तनख़्वाह में तो सिर्फ़ किराए निकल गए - ज़ीशान साजिद

जी में हो तो दर पर रहते हैं वर्ना आवारा फिरते हैं
हम इश्क़ उस से करते हैं मगर कोई बा-तनख़्वाह नहीं करते - फ़रहत एहसास

तूल-ए-फ़िहरिस्त-ए-हाजात कुछ रहम कर
मेरी मुश्किल समझ मेरी तनख़्वाह देख - अशफ़ाक़ रहबर
तूल-ए-फ़िहरिस्त-ए-हाजात* (इच्छाओं की लिस्ट)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल - भारतेन्दु हरिश्चंद्र

माळवण से मुंबई

श्रीमती वीणा जी शिरशाट
पर्यवेक्षक

मनुष्य केवल सामाजिक ही नहीं, अपितु गतिशील प्राणी भी होता है । एक ही जगह पर रहना उसे गँवारा नहीं होता । इस उबाऊपन से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य ने तीर्थयात्रा, पर्यटन, पिकनिक जैसी आदतों का पालन करता है । एक बार की बात है । हम सब सहलियों ने अप्रैल/मई माह में कोंकण जाकर पिकनिक मनाने का कार्यक्रम बनाया । निर्णय हो गया तो सभी आयोजन करने में व्यस्त हो गए । हमें एक अच्छी गाड़ी और अच्छा ड्राइवर मिल गया था । हम सभी सहेलियाँ उस गाड़ी से कोंकण के लिए रवाना हुए। रास्ते में रत्नागिरि तथा आसपास में उपलब्ध सभी प्रेक्षणीय स्थलों का आस्वादन करते हुए हमारी मंडली मालवण (सिंधुदुर्ग) के लिए जा रही थी । मालवण सिंथुदुर्ग में अवस्थित एक मनोहारी जगह है ।

प्रकृति का सौंदर्य वहाँ कण-कण से झाँकता है । वहाँ के आम, कटहल, जामुन, करवंद का आस्वाद लेकर वापस मुंबई आने को मन नही मान रहा था। लेकिन सभी को अपने काम पर भी तो लौटना था।

गाँव में छुट्टियाँ बिताकर हम सभी वापस मुंबई के लिए निकल गए। रास्ता कठिन तथा लंबी थी । एहतियात के तौर पर हमने गाड़ी की सक्षमता की जाँच भी कराई । सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। करीब सुबह 10 बजे हम सभी जलपान करने हेतप एक गाँव में रूक गए। जलपान करके सभी वापस गाड़ी में बैठ गए । तभी अचानक पता चला कि ड्राइवर के की-चेन से गाड़ी की चाभी गायब थी । हमारे पाँव के नीचे से जमीन खिसक गई। सबने मिलकर चाभी की खोज शुरू की। लगभग एक घंटा बीत गया । चाभी का कहीं भी नामोनिशान नहीं था । थक-हारकर हमलोग उसी होटल में जाकर बैठ गए जिसमें जलपान किया था । हमें संकटग्रस्त देखकर आसपास के गाँववाले हमारी पूछताछ करने लगे तथा तरह-तरह की सलाह देने लगे । उनमें से एक की सलाह पर पड़ोस के गाँव से मेकैनिक लाने के लिए ड्राइवर को भेजा गया । थोड़ी देर पश्चात मेकैनिक उसके रिपेयरिंग के सामान के साथ आया और गाडी की जाँच की । वहाँ रिपेयरिंग की आधुनिक सुविधा न होने पर उसने “Driving Wheel Unit” निकाल लिया और वापस अपने गैरेज को चला गया । थोड़े समय पश्चात चाभी समेत नया “Driving Wheel Unit” लाकर गाडी में लगाया। हम सभी आश्वस्त हो गए और आगे की यात्रा शुरु हुई । गाड़ी तो स्टार्ट हो गई, किंतु आनेवाले संकट की हमें जरा भी भनक नहीं थी ।

लगभग आधा रस्ता काटने के पश्चात हमें इंधन के समाप्त होने की सूचना दी गई । अब सबसे बड़ी प्राथमिकता गाड़ी में पेट्रोल डलवाना था । ड्राइवर ने बताया कि हमने जो नये “Driving Wheel Unit” की चाभी बनवाई थी वह “Fuel Tank” के लिए तथा Door के लिए नहीं चलेगी । एक तो बहुत दूरी तय करना बाकी था, पूरे घाट का रास्ता तथा दूर-दूर तक गाड़ी न होने पर आपातकालीन मदद मिलने की भी

कोई संभावना नहीं । हम सभी डरे हुए, सहमे हुए थे । जान मुठ्ठी में लेकर बैठे थे । ड्राइवर ने सुझाव दिया कि रास्ते में महाड शहर पडता है, वहाँ तक पहुँचना जरूरी है । जैसे-तैसे हम महाड शहर पहुँचे । वहाँ पर एक अच्छा सा गैरेज ढूँढ निकाला । गैरेजवालों को हमने अपनी आपबीती सुनाई । वहाँ से "Fuel Tank" के लिए एक चाभी तथा "Door" के लिए एक अलग चाभी बनवाई । गाड़ी में पूरी टंकी पेट्रोल भरवाया ताकि रास्ते में फिर से किसी कठिनाई का सामना न करना पड़े । कुल 3 चाभियों के साथ मुंबई के लिए रवाना हुए।

सिंधुदुर्ग से मुंबई की हमारी यह यात्रा बहुत ही अविस्मणीय तथा रोमांचकारी रही । रास्ते में बहुत सारी अघटित घटनाओं का सामना करना पड़ा । सफर में अच्छे-बुरे सभी तरह के लोग मिले । सभी से कुछ ना कुछ सीखने को मिला । एक सबक मिला कि जब कभी लंबी यात्रा के लिए प्रस्थान करें तो अपने पर्स में गाड़ी की डुप्लिकेट चाभी लेना न भूलें । सीख कहीं से भी मिले, कैसे भी मिले, मनुष्य के जीवन को परिष्कृत ही करती है । इस अर्थ में यह यात्रा काफी उपयोगी एवं प्रेरणादायी रहा ।

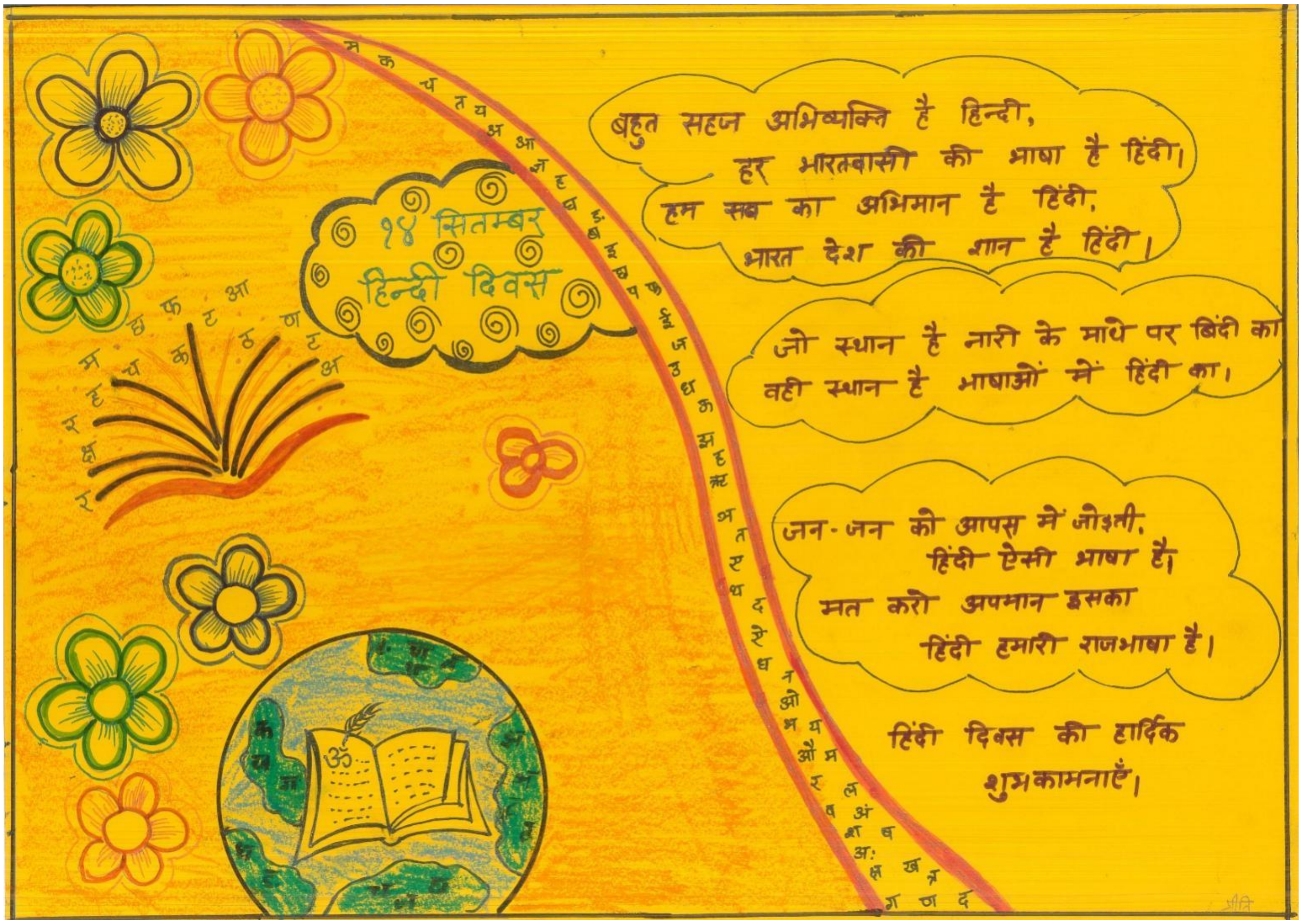

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

सरकारी कार्यालयों में हास्य-मनोरंजन की भूमिका

सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

हास्य और मनोरंजन पेशेवर जीवन को ऊर्जित रखने में काफी मददगार सिद्ध होते हैं । पर सरकारी कार्यालयों की अपनी मर्यादाएँ भी होती हैं । कितना हास्य ठीक है ? कैसा हास्य ठीक रहेगा ? मनोरंजन हो, तो कैसा हो, कितना हो ? ये ऐसे प्रश्न हैं जो प्रत्येक सरकारी कार्यालय में हमेशा लोगों में मस्तिष्क में घूमते रहते हैं ।

-कुछ मज़ाकिया सुनना चाहते हो?

इस शुरुआती पंक्ति ने कार्यस्थल में हमारे सामने आने वाली कई अन्य पंक्तियों की तुलना में अधिक हंसी और संभावित रूप से अधिक परेशानी पैदा की है। सच्चाई यह है कि हम हँसना पसंद करते हैं। यह मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से हमारे लिए अच्छा है। फिर भी मजाकिया और आपत्तिजनक के बीच एक बहुत महीन रेखा है, और इस मुद्दे को कैसे हल किया जाए, यह समझना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

कार्यस्थल पर हास्य के प्रमुख घटकों में से एक यह है कि वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा इसे कैसे लिया जाता है। कुछ नए शोधों के अनुसार, यदि कार्यकारी टीम उचित हास्य का उपयोग करती है, तो यह वास्तव में उन्हें अधिक सक्षम दिखा सकता है। हालाँकि, अनुचित हास्य अनुचित ही होता है । इसमें नकारात्मक परिणामों के अलावा और कुछ भी नहीं है । यह दूसरों को नकारात्मकता की ओर उकसाता है और कार्यालय के स्वस्थ वातावरण को नुकसान पहुंचाता है । अधिकारी-कर्मचारी एवं कर्मचारी-कर्मचारी संबंधों की चुनौतियों से बचने के लिए दोनों के बीच अंतर को समझना महत्वपूर्ण है।

नेतृत्वदाता अच्छे या बुरे के लिए रोल मॉडल हैं

हाल ही में एचबीआर में प्रकाशित लेख में, लेखक ने इस बारे में बात की कि किस हद तक उच्चाधिकारियों का हास्य व्यवहार बाकी कर्मचारियों के लिए एक संकेत था कि कार्यस्थल में क्या प्रोत्साहित या सहन किया जाता था।

एक अध्ययन में पाया गया कि एक महत्वपूर्ण कारक वह डिग्री थी जिस हद तक नेताओं ने आक्रामक हास्य का उपयोग किया, जैसे कर्मचारियों के सदस्यों को चिढ़ाना या गंदे चुटकुले सुनाना । यहां हमारे परिणामों से पता चला कि जो उच्चाधिकारी इस अधिक जोखिम भरे हास्य रूप को आगे बढ़ाते हुए देखे जाते हैं, वे अपने कर्मचारियों को ऊर्जित तो रख पाते थे परंतु उनके कर्मचारियों के बुरे व्यवहार का

मार्ग प्रशस्त करने की संभावना भी बन जाती थी, और उनकी टीमों पर काम की प्रतिबद्धता की भावना बनाने की संभावना कम थी ।

कर्मचारियों के बीच परस्पर संबंध के दृष्टिकोण से यह बहुत सरल है:-अधिकारियों को यह समझने की आवश्यकता है कि हास्य के लिए ये "जोखिम भरे" या "आक्रामक" दृष्टिकोण सकारात्मक कार्यस्थल नहीं बनाते हैं, और वे वास्तव में अपनी टीमों के प्रदर्शन को बाधित कर सकते हैं। हममें से अधिकांश लोग यह महसूस करते हैं कि प्रत्येक चुटकुले के लिए किसी विशिष्ट लिंग, जाति, धर्म या अन्य संरक्षित वर्ग की कीमत पर हंसी की आवश्यकता होती है, लेकिन कुछ अन्य समय हो सकते हैं जहां स्थिति इतनी स्पष्ट नहीं होती है।

क्या उचित है और क्या नहीं?

एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए, यदि टीम या संगठन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे मजाक का पात्र महसूस होगा, तो संभवतः विषय से पूरी तरह से बचना ही बेहतर होगा। यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता है कि कोई व्यक्ति हास्य के किसी विशेष प्रयास से कब आहत या परेशान है, लेकिन जब तक कर्मचारी के कानूनी वकील की ओर से उत्पीड़न का दावा करते हुए पत्र आता है, तब तक समस्या को ठीक करने में बहुत देर हो चुकी होती है। यह दावा करने की कोशिश करना कि "यह केवल एक मजाक था" कानूनी बचाव नहीं है।

अधिक मौलिक रूप से, प्रशिक्षण विधियों में से एक जो मैंने वर्षों से उपयोग की है, वह है वितरण के सबसे चरम स्तर पर मजाक को ले जाना। मेरे पास ऐसे प्रबंधक हैं जो कल्पना करते हैं कि यह मजाक कंपनी के बाहरी विपणन चैनलों पर प्रसारित किया जा रहा है और फिर विचार करें कि यदि यह मजाक टीम के केवल चार या पांच लोगों के लिए नहीं बनाया गया था, बल्कि फर्म के बाहर चार या पांच हजार लोगों के लिए बनाया गया था, तो इससे सार्वजनिक दृष्टि में प्रबंधक और कंपनी की छवि कैसी दिखेगी। यह कभी-कभी नेताओं को यह महसूस करने में मदद करता है कि इस क्षण में त्वरित हंसी से कहीं अधिक व्यापक निहितार्थ हैं।

क्या आपके प्रबंधकों को यह मिलता है?

जबकि हास्य एक प्रभावी संगठनात्मक उपकरण हो सकता है, हमारा अध्ययन इस संदेश को पुष्ट करता है कि नेतृत्वदाताओं को रोल मॉडल के रूप में अपनी स्थिति के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। उनकी स्थिति के कारण, उनके कार्य उनके कर्मचारियों के लिए सामाजिक संकेत के रूप में कार्य करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम होते हैं। प्रबंधकों को इस बारे में सावधान रहना चाहिए कि वे अपनी टीमों के सामने खुद को कैसे चित्रित करते हैं, अपनी आत्म-निगरानी

कौशल को बढ़ाते हैं और इस बात के प्रति अधिक जागरूक होते हैं कि विभिन्न स्थितियों में किस प्रकार का हास्य उचित है।

जैसे ही आप इसे पढ़ते हैं, उन प्रबंधकों पर विचार करें जिनके साथ आप सीधे काम करते हैं: क्या उनके पास सही निर्णय लेने में सक्षम होने के लिए आत्म-जागरूकता और आत्म-निगरानी कौशल का उचित स्तर है, या क्या उन्हें कर्मचारी संबंध परिप्रेक्ष्य से अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता है ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके कि क्या उचित है और क्या नहीं?

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक तरफ उचित और मर्यादित हास्य सरकारी कार्यालयों में स्वस्थ और ऊर्जित वातावरण बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है, वहीं यह भी ज़रूरी है कि हमारे उच्चाधिकारीगण इसे सकारात्मक रूप में लें और कार्यालयकर्मी मर्यादा और अमर्यादा के बीच के अंतर को स्पष्टतः समझें ।

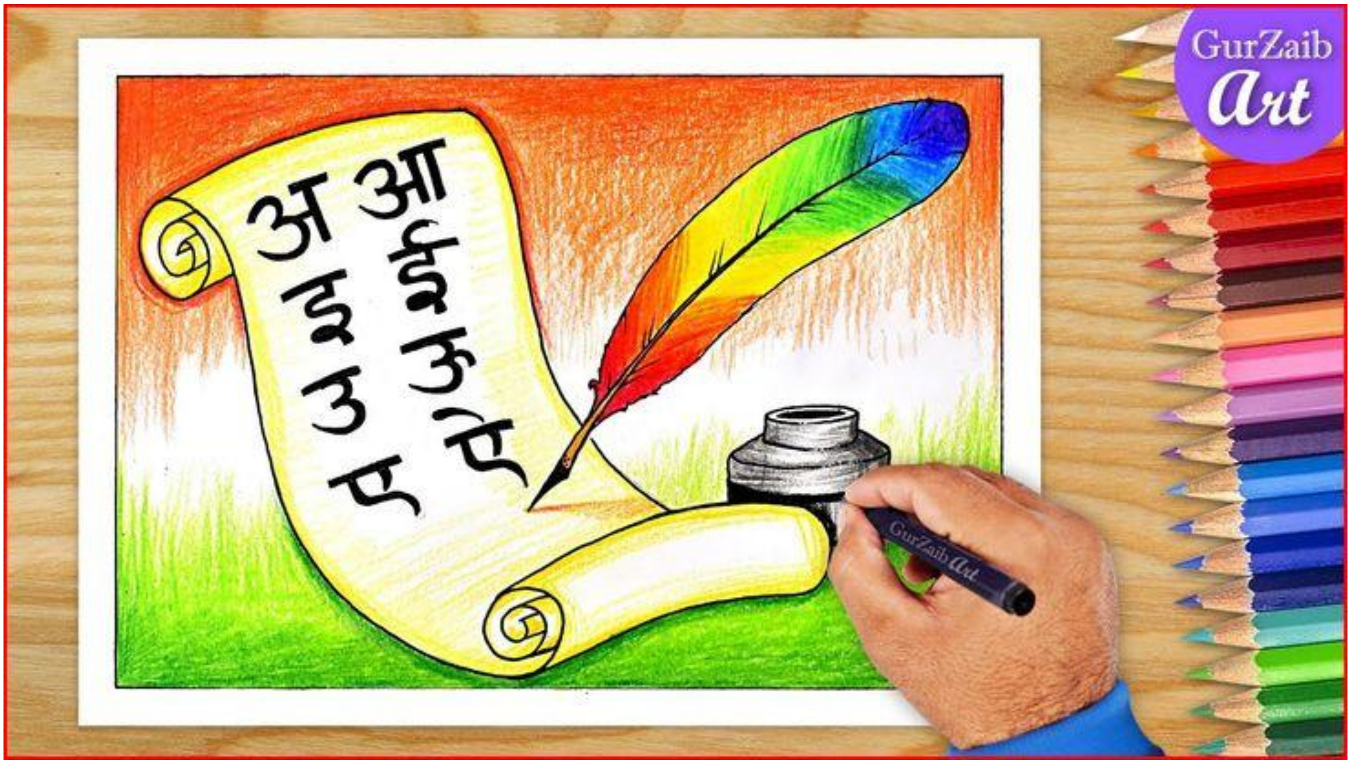

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

चलचोटिया विश्वविद्यालय

पिछले दिनों भारत में वैश्विक कृत्रिम मेधा सम्मेलन आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में दो चीजें काफी प्रसिद्ध हुईं । सबसे पहले ताली बटोरी एक निजी विश्वविद्यालय ने जिसका नाम है गलगोटिया विश्वविद्यालय । दूसरी ताली एक राजनीतिक दल ने अपने शिष्ट प्रदर्शन से बटोरी ।

इन तालियों के बीच मुझे याद आया अपना विश्वविद्यालय । वह भी निजी ही है, नाम भी मिलता-जुलता है - 'चलचोटिया विश्वविद्यालय' । इस विश्वविद्यालय से मेरे जैसे अनगिनत रत्न निकले हैं जिन्होंने जीवन में अनुकृति के अतिरिक्त कुछ और किया हो, तो आप बता सकते हैं । इसी विश्वविद्यालय में हमें सिखाया गया था कि भले ही मोबाइल फोन का आविष्कार अँग्रेज़ों ने किया हो, पर मिस्ड क़ॉल का आविष्कार चलचोटिया विश्वविद्यालय में ही किया गया था । बाद में यह इतना पॉपुलर हो गया कि कहीं-कहीं वास्तविक कॉल से अधिक मिस्ड कॉल ही मारे जाने लगे । प्रेमी युगलों के लिए तो यह राम-बाण जैसी औषधि सिद्ध हुई । ठीक ही तो है, जब मिस्ड कॉल से ही संदेशों का आदान-प्रदान हो जाए, तब वास्तविक कॉल करके अपनी जेबें क्यों लुटवानी ? इस तरह मेरे इस विश्वविद्यालय ने भारत के लाखों-करोड़ों लोगों की बचत कराई । देखा-देखी संसार के अन्य देश भी इसे अपनाने लगे । मेरा विश्वविद्यालय इतना उदार है कि इस आविष्कार का कोई पेटेंट नहीं कराया, अन्यथा मिस्ड-कॉल की रॉयल्टी से ही भारत दुनिया का सबसे अमीर देश बन चुका होता ।

अभी हाल-फिलहाल की ही घटना है । गलगोटिया की लोकप्रियता से आहत होकर किसी निजी आईटी कंपनी ने अपने बीस हज़ार इंजीनियरों का फिर से इंटरव्यू लिया । सभी इंजीनियर हैरान-परेशान थे । किसी ने हिम्मत करके एचआर से पूछ ही लिया कि एक बार इंटरव्यू ले ही लिया, तब फिर से क्यों लिया जा रहा है ? एचआर का उत्तर सुनकर उस हिम्मतवाले इंजीनियर की आँखों में आँसू आ गए । एचआर ने कहा कि हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे बीस हज़ार इंजीनियरों में से कोई गलगोटिया का प्रोडक्ट तो नहीं है ! उस हिम्मतवाले ने फिर पूछा कि यदि हुआ तब उसका क्या करेंगे ? नौकरी से निकाल देंगे क्या ? एचआर ने अपनी पेशेवर दक्षता दिखाते हुए कहा - "नहीं, नहीं, हम ऐसे इंजीनियरों को सिर्फ माइक के पास नहीं जाने देंगे । सारा गुड़–गोबर माइक से ही होता है ।"

यह तो थी गलगोटिया और उस आईटी कम्पनी की बात ! वापस आते हैं अपने विश्वविद्यालय चलचोटिया की तरफ । इस विश्वविद्यालय में प्राइमरी से लेकर उच्चतम कक्षाओं तक की सभी कक्षाएँ उपलब्ध हैं । अपनी दुकानदारी ऐसे ही थोड़े चमक रही है । चलचोटिया के ही प्राइमरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री कुटिलानंद जी के सेवानिवृत्ति समारोह का अभिनंदन-पत्र बनाने की जिम्मेदारी उनके सहकर्मी उप-प्रधानाध्यापक श्री असंतुष्टानंद ने संभाली । आमतौर पर अध्यापकों के सेवानिवृत्ति वाले अभिनंदन-पत्र में आकाश-पाताल के कुलांचे मिलाकर सेवानिवृत्ताकांक्षी को ईश्वर के जस्ट बाद वाली कुर्सी

(मतलब कि ठीक बगलवाली कुर्सी) पर बिठाए जाने का रिवाज है । उस अभिनंदन-पत्र से ऐसा आभास होने लगता है मानो सृष्टि के अंतिम बुद्ध ही आज सेवानिवृत्त हो रहे हैं । किंतु यहाँ श्री असंतुष्टानंद जी ने पत्र लिखने के पहले गलती से सच्चाईवाला च्यवनप्राश खा लिया और उन्होंने निम्न अभिनंदन पत्र लिख मारा जो बिना किसी सेंसर के सभा में पढ़ भी डाला गया। आप भी पढ़ें और अपनी राय दें !

हमारे प्यारे प्रधानाध्यापक श्री कुटिलानंद जी आज हमसे विदा ले रहे हैं । इनका जन्म उसी तरह हुआ जैसे समस्त प्राणियों का होता है। वैसे स्पष्ट कर दूँ कि इनके माता-पिता आठ बच्चों के बोझ से पहले ही त्रस्त थे और नवें का स्वागत करने को कदापि तैयार नहीं थे । परंतु जबरन हर बात में कूदने की आपकी आदत ने शायद आपको संसार में भी कुदा दिया । आप बचपन से ही जड़बुद्धि और भोंदू रहे, तभी आपकी कुंडली देखकर पंडितजी ने निराशापूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए कह दिया था कि आप शायद अध्यापक बनेंगे । लेकिन बाद में विभागीय अनुदानों तथा पाठशाला के खर्चों में भारी लूटमार और नोच-खसोट करके आपने सिद्ध कर दिया कि करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान !

विद्यार्थियों को पीटने की आपकी क्षमता अतुलनीय रही । विशेषकर आपसे ट्यूशन न लेने वाले छात्र सदैव आपकी शनि दृष्टि से पीड़ित रहे । कालांतर में यह अफवाह आपने स्वयं फैलाई कि माता सरस्वती की प्रेरणा से जन-जन में ज्ञान का प्रकाश बाँटने हेतु आप शिक्षा के क्षेत्र में आए । किन्तु सत्य यह है कि किसी भी तरह की नौकरी न मिलने और तम्बाकू विक्रय में भी असफल रहने के बाद सूदखोरों के दबाव के कारण आप शरीर त्याग करने का मन बना चुके थे । लेकिन शिक्षा-जगत और हजारों विद्यार्थियों के दुर्भाग्य से आपकी अध्यापकी लग गई। यहाँ आपने अध्यापन के अतिरिक्त सब कुछ किया । टुच्ची राजनीति के तो आप महारथी हैं ही, चाटुकारिता में भी आपका सानी मिलना कठिन है। विभागीय अधिकारियों के नवनीत लेपन में आपने जो कीर्तिमान स्थापित किए, उसी के फलस्वरूप मेरा स्थान हड़प कर आप प्रधानाध्यापक बन गए । इस कार्य की सिद्धि के पीछे आपकी सुमुखी और पति-अनुगामिनी श्रीमती जी का विशेष योगदान रहा, ऐसी कुछ दबी-दबी चर्चा भी सुनी गई थी ।

अनेक साथी शिक्षकों ने आज के अपने वक्तव्य में आपको राष्ट्र निर्माता, परम विद्वान और साहित्य पंडित इत्यादि बताया । किंतु परम सत्य यह है कि भाषा और वर्तनी की त्रुटि के बिना आप अपना नाम तक नहीं लिख पाते । लिंगभेद के बारे में तो अपने वार्तालाप में आप ऐसे ही उदासीन रहते हैं जैसे संसार त्याग चुके संन्यासी सांसारिक वस्तुओं से निर्लिप्त रहते हैं । शिष्टाचार तो आपको छू भी नहीं पाया है । बाबा तुलसीदास को आपसे ही "मो सम कौन कुटिल खल कामी" लिखने की प्रेरणा मिली होगी, ऐसा मेरा विश्वास है । विभाग में आपके प्रति व्याप्त घनघोर नकारात्मकता और असंतोष के बावजूद आपने अपनी गुंडागर्दी और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निजी एवं पारिवारिक मधुर संबंधों के दम पर अपना जटिल कार्यकाल पूर्ण किया । घोटालों की जो लंबी विरासत आप छोड़े जा रहे हैं वह कदम-कदम पर हमें आपकी याद दिलाती रहेगी ।

हम हैं चिर दुखी

चलचोटिया प्राइमरी विद्यालय के समस्त अध्यापक और कर्मचारीगण

फूलमालाओं से लदे प्रधानाध्यापक श्री कुटिलानंद जी अपनी प्रशंसा से विभोर हुए जा रहे थे । उनकी कृतज्ञता उनकी आँखों से टपकने लगी थी । अब संचालक ने दो शब्द कहने के लिए उन्हें आमंत्रित किया । पहले तो काफी ना-नुकुर की, फिर तैयार हो गए । सेवानिवृत्ति की टीस उनकी आवाज में ध्वनित होने लगी - “मेरे मित्र अध्यापकों और कर्मचारीगण, इस नाचीज़ के लिए आपने इतना अच्छे विदाई समारोह का आयोजन किया, इसके लिए मेरा आभार स्वीकारें । परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत सत्य होता है । और एक परिवर्तन तो मैं आज ही देख पा रहा हूँ । विद्यालय के उप-प्रधानाध्यापक श्री असंतुष्टानंद जी, जिन्हें मेरे कारण प्रधानाध्यापक की कुर्सी नसीब नहीं हुई, माना कि थोड़े दिनों के लिए ही सही, पर तब तक उस कुर्सी पर वे ही विराजेंगे । इस बात का मुझे अत्यधिक संतोष है । मैंने अपनी प्रधानाध्यापकी में विद्यालय में एक भी समारोह नहीं होने दिया । हाँ, उसका बजट ज़रूर बना और खर्च भी हो गया । लेकिन श्री असंतुष्टानंद जी ने अपने कार्यकाल के पहले ही दिन इतना अच्छा समारोह करा लिया । इस समारोहों का महत्व यदि मुझे मालूम होता तो और भी अधिक राशि का बजट बनाता । लेकिन कोई बात नहीं, एक शेर है कि “कोई उतना ही पाता है, जितना भी वह बोता है“ । आप सबों को मेरी शुभकामनाएँ । मेरी विशेष शुभकामना श्री असंतुष्टानंद जी के लिए है कि ईश्वर उनके नाम के अनुरूप ही उन्हें हमेशा बनाए रखें । और हाँ, मैं विद्यालय से सेवानिवृत्त हो रहा हूँ, घर से नहीं । मेरे घर पर ट्यूशन अनवरत चलता रहेगा । मेरे ट्यूशन में भेजनेवाले अध्यापक को ट्यूशन-फीस का बीस प्रतिशत मानदेय प्रति महीने मिलता रहेगा । मेरी कृतज्ञता स्वीकार करें । समारोह में बैठी उनकी धर्मपत्नी जी मंद-मंद मुस्कुरा रही थीं ।

इंटरनेट के आने से पहले
(जब जीवन धूल-भरा, शोर से भरा और मुक्त था)

श्रीमती बिन्दु अचन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ओझल होते कदमों की आहट

उस समय से पहले जब जीवन वाई-फाई पासवर्ड और स्क्रीन टाइम लिमिट्स के इर्द-गिर्द घूमता था, 80 के दशक में सब कुछ खुला और थोड़ा उग्र लगता था। एक ऐसी दुनिया में बड़े होना जहाँ समय को किसी डिजिटल घड़ी से नहीं मापा जाता था। हमारे माता-पिता बस इतना उम्मीद करते थे कि हम सड़क की बत्तियाँ जलने पर घर आ जाए।

ज्यादातर दिनों में, हम अंधेरा होने तक बाहर रहते और खरोंच लगी घुटने और घास के दाग के साथ घर लौटते, जैसे यह एक सामान्य यूनिफ़ॉर्म हो। हमारे पास फॉलोअर्स नहीं थे, लेकिन हमारे पास एक 'ग्रुप' था जो कहीं भी खोई हुई क्रिकेट बॉल वापस लेने के लिए हमारे पीछे रहते थे। हमारी दुनिया छोटी, धूलभरी और बेहद शोर वाली थी।

रविवासरीय उत्सव : टीवी ही हमारी दुनिया थी:

80 के दशक में, टीवी सिर्फ पृष्ठभूमि की आवाज़ नहीं थी – यह एक घटना थी। मूल रूप से एक ही चैनल दूरदर्शन था, पूरी पड़ोस वाली बस्तियाँ एक ही समय में जीती थीं। रविवार की सुबहें पवित्र होती थीं। चाहे रामायण हो या महाभारत, जब भी ये टी.वी पर आते, अचानक सड़कें खाली हो जातीं। परिवार अपने क्राउन या ओनिडा टीवी के आसपास छोटे कमरे में सिमट जाते थे, और कोई, आमतौर पर एक बच्चे को छत पर जाकर एंटेना ठीक करने का बहुत ही महत्वपूर्ण काम मिलता था। रविवार की शामों में एक जादू सा था, चित्रहार / छायागीत जो हमें नवीनतम बॉलीवुड गाने सुनाता, और मलगुड़ी डेज़ इतनी परिचित लगती थी जैसे कहानियाँ हमारे अपने पड़ोस में ही घट रही हों।

हमारी गली : हमारा मैदान

हमें गैजेट्स की जरूरत नहीं थी। हमारे पास गली थी। हमारा प्लेस्टेशन का संस्करण? लगोरी के लिए सात पत्थरों का सेट, गिल्ली-डंडा के लिए एक लकड़ी का डंडा और एक छोटा टुकड़ा, या कांछा (गुड़िया) से भरा पाउच। छुपा-छुपी, साकली, डॉजबॉल – यह तब तक चलता रहा जब तक मच्छर असहनीय न हो जाते या हमारी माताएँ गेट से हमारे नाम चिल्लाना शुरू न कर दें। गर्मियों की छुट्टियाँ साल का सबसे बड़ा आकर्षण थीं - अनिवार्य रूप से किसी शादी का निमंत्रण। इसका मतलब था नानी के घर के लिए ट्रेन में खिड़कियों से धुएँ के उड़ते हुए लंबी ट्रेन की यात्रा। रातें कज़िन्स के साथ तारों भरे आसमान के नीचे छत पर बिताई जाती थीं। हम नोटिफिकेशन की बजाय तारों को गिनते थे।

स्वाद या समारोह

हमारे स्वादिष्ट व्यंजन न तो आलीशान थे और न ही आयातित – वे बहुत साधारण थे लेकिन अविस्मरणीय थे। कुल्फी-वाले की घंटी या संतरे वाली आइस-कैंडी वाले का पुकारना ही काफी था कि हम पैसों को पसीने से तरबतर हाथों में जकड़े दौड़ पड़ते। घर पर, आप ग्लास जार में भरी हुई पारले-जी बिस्कुट, संतरे

की कैंडी और वो तीखा, खट्टा चूरन पा सकते थे जो आपकी आंखें नम कर देता था फिर भी आप और चाहते थे। और पेय पदार्थ? एनर्जी ड्रिंक का फैशन बनने से पहले, हमारे पास रासना था। इसे मिलाना एक गंभीर विज्ञान प्रयोग जैसा लगता था – अगर पानी ज्यादा हो जाता तो यह बर्बाद हो जाता। खास अवसरों पर, भारी ग्लास की बोतलें जैसे गोल्ड स्पॉट या थम्स अप होती, जिन्हें बहुत कीमती वस्तु माना जाता था।

स्कूल की यादें : रोशनाई के दाग और लोहे के स्केल

स्कूल का हर नया साल ताजे पाठ्यपुस्तकों की अनोखी खुशबू और सालाना ब्राउन पेपर की रस्म के साथ शुरू होता था। हर किताब को बड़े ही अच्छे से ढकना, कोनों को बिल्कुल सही तह करना, और उनपर छोटे लेबल्स चिपकाना जहाँ आपने ध्यान से नाम, कक्षा, विषय लिखा होता है। यह अजीब तरह से संतोषजनक था... जब तक कि जुलाई तक कवर फटना शुरू न हो जाए। और फिर स्कूल की घंटी होती थी – इलेक्ट्रॉनिक ध्वनि नहीं, बल्कि एक बड़ी पीतल की प्लेट जिसे हथौड़े से मारा जाता था। एक जल्दी बजने वाली घंटी आपको अचानक होने वाले गणित के टेस्ट से बचा देती थी, और एक देर से बजने वाली घंटी पूरी तरह से धोखा देने जैसी महसूस होती थी। स्कूल का मतलब लकड़ी की मेज़ें, वह स्याही की पेन जो हमारी जेब में रिसती थी, स्याही मिटाने वाली गुमियां और छुट्टियों का होमवर्क जो सावधानीपूर्वक सुंदर अक्षरों में लिखा जाता था। एक नटराज या कैमेल ज्यामिति बॉक्स जिसमें विभाजक शायद ही कभी असली ज्यामिति देखता था लेकिन मेज़ों पर नाम लिखने में मदद करता था। हीरो फव्वारा पेन को एक पेंसिल वाले बच्चे से पेन वाले बच्चे में प्रमोशन के रूप में देखा जाता था, जिसमें हमारी सफेद शर्ट पर स्थायी स्याही के दाग लग जाते थे जिन्हें कितना भी साफ या रगड़ लें, हटाया नहीं जा सकता था। उस ज़माने में शरारतें बहुत सरल और हानिरहित होती थीं – शिक्षक के न देखते हुए डेस्क के नीचे से मुड़े हुए नोटों को सरका देना, घंटी बजने से पहले दोस्त के लंच में से चुपके से कुछ निवाले खा लेना, या घबराते हुए स्कूल डायरी में माता-पिता के हस्ताक्षर की नकल करने की कोशिश करना और उम्मीद करना कि वह देखने में असली लगे। स्कूल सरल, शोरगुल भरा और अस्त-व्यस्त था – और किसी तरह, यही बात इसे अविस्मरणीय बनाती थी।

बिजली कटने पर गुस्सा

भारत में 80 के दशक की बात करें तो लोड शेडिंग का ज़िक्र किए बिना बात अधूरी है। रात में जब बिजली चली जाती थी, तो यह कोई समस्या नहीं लगती थी - बल्कि किसी मज़ेदार चीज़ की शुरुआत लगती थी। मोमबत्तियाँ जलाई जाती थीं, और अचानक दीवारें परछाईं वाले कठपुतली के लिए स्क्रीन बन जाती थीं। सब मिलकर एक डरावनी भूतिया कहानी सुनाने में जुट जाते थे, बहादुरी दिखाने की कोशिश करते थे जबकि बाकी सब लोग हमेशा की तरह थोड़ा और पास बैठ जाते थे। जिसे सब लोग बिजली कटौती समझते थे, वह हमारे लिए रोमांच का अतिरिक्त समय होता था। संग्रह के नाम पर कुछ अद्भुत चीजें इस तरह होती थीं - नटराज पेंसिल, सिगरेट के खाली पैकेट और दियासलाई के कवर, फेनटॉम स्वीट सिगरेट, सुगंधित रबड़, बूमर मैन टैटू, संगमरमर, क्रिकेट कार्ड, बॉटल का ढक्कन आदि आदि ।

हम क्या से क्या हो गए ? चमकदार करियर के लिए खुले आकाश को खो दिया

बुलाने से लेकर क्लिक करने तक:

हम दोस्त के घर के बाहर खड़े रहते और तब तक उनका नाम पुकारते जब तक वे दौड़ते हुए बाहर नहीं आ जाते। अब हम मैसैज भेजते हैं - कभी-कभी उन्हें भी जो हमारे बगल के कमरे में होते हैं।

घुटनों पर लगी चोटों और खरोंचों से लेकर स्क्रॉल करते अंगूठों तक:

हमारे बचपन की कहानियाँ चोटों, धूप से झुलसे घावों और धूल से सने कपड़ों में लिखी गई थीं। आज हमारे पास कहानियों के नाम पर कुछ नहीं बचा है, सिवाय उन तथाकथित रोमांचों के जो ज़्यादातर स्क्रीन पर ही देखने को मिलते हैं, हाई डेफिनिशन में सुरक्षित और स्पष्ट, लेकिन उनमें मिट्टी की गंध और गिरने का दर्द गायब है।

जीवंत क्षणों से लेकर उन्हें रिकॉर्ड करने तक:

उस ज़माने में, जब हम खूबसूरत सूर्यास्त देखते थे, तो हम वहीं खड़े होकर तब तक देखते रहते थे जब तक आसमान में अंधेरा नहीं हो जाता था। अब हम कैमरा उठा लेते हैं, एंगल और फिल्टर की चिंता करते हैं, और कभी-कभी तो देखना और उसकी सुंदरता को निहारना ही भूल जाते हैं।

ऊब से लेकर लगातार शोर तक:

80 के दशक में, ऊब हमें बाहर जाने, किताबें पढ़ने, चीजें बनाने या खेल ईजाद करने के लिए प्रेरित करती थी। अब, हर शांत पल अंतहीन स्क्रॉलिंग में बीतता है, और हम शायद ही कभी अपने विचारों के साथ इतना समय बिता पाते हैं कि कुछ नया सोच सकें।

पीढ़ीगत अंतर

हम एक अजीब बीच की पीढ़ी से हैं। हमें पहली बारिश की खुशबू याद है जब वह सूखी मिट्टी पर गिरती थी, और हमें यह भी पता है कि मॉडेम इंटरनेट से जुड़ते समय कैसा ध्वनि करता है। हमने दोनों जीवन जीया है। हां, आज का जीवन अधिक जुड़ा हुआ, अधिक कुशल और कई मायनों में अधिक आरामदायक लगता है। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता है कि हमने उस निश्चिंत, शरारती खुशी में कुछ ज्यादा ही बलिदान दे दिया – वह खुशी जिसे चार्जिंग केबल या डेटा पैक की जरूरत नहीं होती थी।

छोड़ आए हम वो गलियाँ !

आज मैं उसी मोहल्ले से गुजरती हूँ, शांति कुछ अलग लगती है। यह दोपहर की नींद की आलसी खामोशी नहीं है - यह बंद दरवाजों और स्क्रीन के पीछे जिन लोगों से भरी हुई स्थिरता है। वह धूल भरी जमीन जहां कभी हमने अपने क्रिकेट के पिच के लिए तीन पत्थरों का निशान बनाया था, अब पार्किंग की जगहें बन गई हैं। वो गली जिसमें 'हाउज़ट!' की आवाज गूंजती थी, अब कारों और बाइकों से भरी है। वो सुनहरे दिन रातोंरात गायब नहीं हुए। वे धीरे-धीरे फीके पड़े और जगह-जगह सुविधाओं, अपग्रेड्स और व्यस्त जीवन ने ले ली। सड़क की लाइटें हर शाम अभी भी जलती हैं, जैसे हमेशा जलती थीं। फर्क बस इतना है... बच्चे पहले ही अंदर चले गए हैं!

राजभाषा नियम 1976

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है ।

राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित

कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा ।

हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है;या

केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से

उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है ।

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है ।

- डॉ. अमरनाथ झा

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

आँचल पत्रिका के 23वें अंक की पाठकीय प्रतिक्रिया बहुत सारे कार्यालयों से आई हैं । इन सहृदय कार्यालयों के हम आभारी हैं जिन्होंने अपनी प्रतिक्रिया और अमूल्य सुझावों से पत्रिका की गुणवत्ता और पाठकीयता को समृद्ध करने में हमारी मदद की ।

क्रम संख्या	कार्यालय का नाम	पत्र संख्या
1	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) मुंबई	सं.प्र.नि.ले.प.(के.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/I/1215510/2025 दिनांक 01.12.2025
2	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), केरल	हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26 दिनांक 11.12.2025
3	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा-1), तमिलनाडु	प्र.मले.(लेप-1)/हिं.अनु./प्रशं पत्र/14-02/2025-26/44 दिनांक 10.12.2025
4	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य), ऑडिट भवन, नई दिल्ली	प्रशा./रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2025-26/84 दिनांक 19.12.2025
5	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), कर्नाटक, बेंगुलुरु	प्रमले(ले.प.-II)/रा.भा.अ./हिं.प.पा.प्र./14-23/2025-26/159 दिनांक 22.12.2025
6	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखंड, राँची	रा.भा.अनुय/ले.प./90/पत्रिका पावती/2025-26/233 दिनांक 08.01.2026
7 8	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), बेंगुलुरु	ई-मेल दिनांक 03.12.2025
9	कार्यालय प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़	रा.अ./हिंदी पत्रिका समीक्षा/2025-26/I/1214256/2025 दिनांक 28.11.2025
10	कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), उत्तराखंड	26.रा.भा.अनु./विभागीय पत्रिकाएँ/2025-26/I/1211727/2025 दिनांक 26.11.2025
11	क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज	क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/400
12	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), मध्य प्रदेश	हिं.क./फा-7/जावक-74 दिनांक 17.11.2025
13	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) मेघालय, शिलॉग	हिंदी प्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/617

किसी भी लम्बी से लम्बी या कठिन से कठिन यात्रा की शुरुआत हमेशा पहले कदम से होती है । हिंदी में काम करना आसान है, शुरु तो कीजिए !

योगदान / नियुक्तियाँ / पदोन्नतियाँ / स्थानांतरण / सेवानिवृत्ति
(01.09.2025 से 31.03.2026 तक)

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री नितिन घाटकाम्बले	पर्यवेक्षक	01.10.2025
2	सुश्री प्रतिभा वर्मा	स.ले.प.अ.	24.12.2025
3	श्री विजय एन कोठारी	महानिदेशक	01.01.2026
4	सुश्री प्रिती सूर्यवंशी	लेखापरीक्षक	01.01.2026

योगदान/नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री उदयराज यादव	स.ले.प.अ.	03.11.2025
2	श्री सतीश कुमार	स.ले.प.अ.	03.11.2025
3	श्री गमलेश कुमार	स.ले.प.अ	04.12.2025
4	श्री टोनी दहिया	स.ले.प.अ	30.12.2025
5	श्री अजीत तमोलिया	सहा. पर्य.	01.01.2026
6	श्री वीरेन्द्र जाधव	स.ले.प.अ	01.01.2026
7	श्री एंसी वर्गीज	स.ले.प.अ.	12.01.2026
8	श्री विराटकुमार साहनी	स.ले.प.अ	19.01.2026
9	श्री बकुल जाधव	स.ले.प.अ	02.02.2026
10	सुश्री अमृता राउत	स.ले.प.अ.	02.02.2026
11	श्री समीर पठाड़े	स.ले.प.अ.	02.02.2026

स्थानांतरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री नितिन राजपुरोहित	लेखापरीक्षक	30.09.2025
2	श्री विक्रम सिंह	स.ले.प.अ	21.11.2025
3	श्री यतेन्दर कुमार नागर	स.ले.प.अ.	05.12.2025
4	सुश्री दीक्षा गुप्ता	स.ले.प.अ.	08.12.2025
5	श्रीमती प्रियंका केसरवानी	स.ले.प.अ.	08.12.2025
7	सुश्री अनिता सिंह	निदेशक	30.12.2025
8	श्री अनिल मेनन	व.ले.प.अ	04.03.2026

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्रीमती अनुताई भराडे	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	12.11.2025

"आँचल" परिवार नवनियुक्त और योगदान करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है । **"आँचल"** परिवार स्थानांतरित हुए और सेवानिवृत्त हुए सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता है ।

चित्रों के झरोखों से

कार्यालयकर्मी टेबल-टेनिस में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए

हिंदी प्रतियोगिताएँ : विजेता टीम पुरस्कार ग्रहण करते हुए

विभागीय राजभाषा शील्ड का गौरवान्वित अनुभाग (सीए-3)

हिंदी कार्यशाला